तिनके, हमारे नीड़ के

ओमप्रकाश गुप्ता

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

तिनके, हमारे नीड़ के

ओमप्रकाश गुप्ता

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-38-7
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल -antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट -www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण -2021
मूल्य- 250.00 रूपये
मुद्रक - शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY OMPRAKASH GUPTA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आत्मकथ्य

जब से होश सभांला हमें अपना यह जीवन एक संघर्षपूर्ण जीवन लगा, पर प्राप्त फल उतना ही मीठा। **"हरिऔध"** जी की **"एक बूँद"** कविता जैसे जीवन के हर पल पर चरितार्थ होती रही। मेरी आत्मा, उस माँ की पुत्र के भविष्य के प्रति जिजीविषा एवं शिक्षकों का मेरे पुत्रवत प्रति प्रेम को न केवल चिर स्मरण ही नहीं करता, बल्कि हमारे मानस से जुडे देवदूतों का भावनात्मक रूप से कृतज्ञ रहना चाहता हूँ, शायद हमारी यह कृति उन महान विभूतियों की सच्ची श्रृद्धांजली देने का स्वल्प प्रयास हो। हमको अपने विद्यार्थी जीवन के तत्कालीन कवि ऋषि सर्व श्री नीरज, श्रीमती महादेवी वर्मा, बालकवि बैरागी, एकता शबनम, बरखा रानी और न जाने कितनों से प्रेरणा मिलती रही। उनके वाचन रस से सराबोर काव्य पाठ का रसास्वादन के साथ साथ बृहमावर्त सनातन धर्म मण्डल "मानस शिशु, मानस किशोर" उपाधि से मैं मानस अनुरागी और आस्तिक बना रहा। विद्यार्थी जीवन में सर्वोदय मंडल से जुडे होने के कारण संत विनोबा भावे, आचार्य जे.बी. कृपलानी, नेता जयप्रकाश नारायण से भी सत्संग मिला। गणित अध्यापन मेरी जीविका का साधन होने के कारण मैं इसके दुरूहता को दूर करने तथा सरल, सुगम्य और रोचक करने के तरीके के बारे शासकीय प्रकाशनों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर अधिवेशनों पर विचार-विमर्श करता रहा। काव्य और कथा लेखन एवं वाचन के क्षेत्र में जबसे रुचि ली तो ऐसा लग रहा कि मैं एक विशाल समुद्र के तट पर बैठे कुछ सीपियाँ चुन रहा हूँ। सच में यह दुनियाँ अनेकों विभूतियों से युक्त है।

ओमप्रकाश गुप्ता

भूमिका

इस संसार में हर प्राणी आध्यात्मिक और भौतिक दर्शन के अनुसार अपनी जीवन जीने की शैली अपनाता है। हमारा मानना है कि हर प्राणी के जीवन दर्शन व गढे स्वप्न का अपना एक नीड होता है जिसमें वह हर बीते पलों को संजोकर उसे जीता है। ऐसा इसलिये है कि इसका निर्माण करते समय जिन तिनकों को अपने सुख दुख के उन पलों, विभिन्न स्थानों की सोंधी खुशबुओं से जोडता है, वे उस घरौंदे के प्राणी विशेष के जजबातों से जुड जाते हैं और इससे जुड़े अन्य प्राणियों का भी कमोवेश जीवन दर्शन यही घरौंदा बन जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इस नाते वह इच्छा रखता है कि वह अपने उन लम्हों को, नीड के तिनकों के जरिए साझा करे जिसे वह आदर्श मानता है। यहाँ तिनके इसलिए महत्वपूर्ण नहीं कि मेरे नीड के अभिन्न अंग हैं, बल्कि ये किसी भी सचेतन प्राणी जगत के जीवन यात्रा के अभिन्न हो सकते हैं क्योंकि नियति पर किसी का नियंत्रण नहीं।

वास्तव में देखा जाए तो ये भावनात्मक तिनके देश, काल, परिस्थिति के भावनाओं के उन उद्वेगों को अपने में समावेश किए होते हैं जिनको नीड निर्माण के समय एकत्र करने में प्राणी कडी धूप में पसीना बहाता है, जमीनी हकीकत को ओढता बिछाता है, तथा स्मरण कर पल पल में हंसता रोता है।

वह अपना बसेरा बनाने में उन क्षणों को अपने आदर्श भावनाओं के तिनकों के जरिये समाज से साझा इसलिए करना चाहता है ताकि वर्तमान और भावी पीढी उन परिस्थितियों और प्रतिक्रियाओं से मानसिक रूप से रूबरू हो सके जिससे वह अनभिज्ञ है। जीवन के आयामों का कोई ठिकाना नहीं कि कौन सा पल या दशा इन जज्बातों के तिनकों से मेल खा जाय और समुचित प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता अनुभव करे और ये सचेतक का काम करे।

हमने अपनी इस कृति "*तिनके, हमारे नीड़ के*" में यत्र तत्र आकर्षक चित्रों को माध्यम बनाकर अपनी रचनाओं को सुसज्जित किया है यह संकल्पना अपने उद्देश्य में किस सीमा तक सफल हुई है यह तो सुविज्ञ पाठकों के प्रतिक्रियाओं रूपी निर्णय से ही मालूम हो पायेगी।

इस कृति में स्वाभावत: कुछ त्रुटियाँ और विसंगतियाँ होगी तो हमें अनभिज्ञ समझ कर क्षमा करेंगें और इसकी गुणवत्ता के बढाने में अपने अमूल्य सुझावों से मुझे अवश्य कृतार्थ करेंगे ।

ओमप्रकाश गुप्ता

संदेश

श्री ओमप्रकाश गुप्त जी की कविताएं जितनी सरल हैं उतनी हीं भावपूर्ण हैं। जीवन से जुडी हूई गतिविधियों का सजीव चित्रण करती आपकी कविताएं सीधे हदय को स्पर्श करती हूई उसे गुद्‌गुदाने लगती हैं। अधिकांश कविताएँ हमें अतीत में डूब जाने को विवश करती हैं। रचनाओं में शब्दों का चयन प्रसंगानुकूल है। औपचारिक शब्दावली का प्रयोग रचना की पृष्ठभूमि की आवश्यकता प्रतीत होता है। बिम्बों का प्रयोग अति आवश्यक होने पर ही किया गया है। भाषा शैली प्रभावपूर्ण होने के साथ साथ अभूतपूर्व संयोजन क्षमता से परिपूर्ण है।

आपकी हर एक कविता में एक अपनापन है। इन्हें पढते समय ऐसा लगता है कि इन्हें समझने की जरूरत है ही नहीं क्योंकि ये हमारे अपने हृदय के भीतर उमडते भाव हैं जो बाहर भीतर रिमझिम-रिमझिम बरस रहे हैं और हमारे अंतर्मन को भिगो रहें हैं। भाषा की सरलता व अनौपचारिकता ने रचनाओं को एक चुम्बकीय आकर्षण प्रदान किया है।

आशा है आपकी रचनाएँ हिंदी साहित्य की अप्रतिम धरोहर बनेंगी।

अनिल कुमार त्रिपाठी
भूतपूर्व प्रधानाचार्य
बलवंत राय मेहता विद्या भवन
ग्रेटर कैलाश2, नई दिल्ली 48

समीक्षा

काव्य मानव जीवन के सतत आयासों का अभिव्यक्त रूप है, जो तत्कालीन वातावरण से प्रभावित होकर युगीन विसंगतियों विद्रूपताओं, संवेदनाओं की चुभन जनमानस को कराता है। कवि और कविता दोनों ही अपने को तटस्थ रखकर अपनी वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ सूक्ष्मेषणा और चिंतन शक्ति के सहारे नैराश्यपूर्ण वातावरण में आशा का संचार करते हैं। वह कवि क्या? जिसकी कविता अपने समय और समाज का प्रतिनिधित्व न कर सके। इस दृष्टि से यदि श्री गुप्ता की "तिनके हमारे नीड के" कविता संग्रह का मूल्यांकन किया जाये तो सहज भावेन रचनायें सहज प्रबोधन के साथ अपने समय से कदमताल करती दिखाई पडती हैं।

प्रायोगिक विचारधारा के कवि श्री गुप्ता नव्यता के आग्राही होते हुये भी किसी वाद या आंदोलन को जन्म नहीं देते किंतु निराशा, कुंठा, हताशा के साथ प्रश्नों की बौछार करते हुए, आगत अनागत को समेटे हुए जीवन के प्रत्येक क्षण को भोगने और सत्य को स्वीकार करने का माद्दा अवश्य रखते हैं। इनकी कविता संग्रह में कई कविताएँ ऐसी मिलती हैं जो लोक जीवन में गहरे पैठकर कमजोर होते हुए संबंधो में कसावट का उपकर्म करती हैं।

इस सरपत समय में संघर्षों एवं झरित होते हुए जीवन मूल्यों का राग श्री गुप्ता ने छेडा है, इससे उनके भविष्य का एवं रचनाधर्मिता का मार्ग सुनिश्चित हो जाता है। कवि को मालूम है कि आज के वक्त में मरहम

लगाकर दिलों को जोडा जाये। कवि की सादी जुबान से छोटी पंक्तियों में कही गयी गंभीर बातें संवेदनात्मक स्तर पर पराकाष्ठा तक पहूंचाती है।

श्री गुप्ता ने जीवन एवं जगत की अनेक वस्तु स्थितियों का साक्षात्कार करते अपनी भाषिक संरचना में एक विशेष ताजगी दी है। भाषिक दृष्टि से कवि सजग है। वाचिक बनावट को जीवित रखते संप्रेषणीयता का पूरा ध्यान रखा गया है। लोक जीवन से जुडाव होने के कारण इनकी काव्य भाषा उस स्तर की है जहाँ मानक हिंदी फेल हो जाती है। यही कारण है कि कवि जनता के वेदनात्मक पक्ष को उभारने में सफल रहा है।

इस स्तुत्य कार्य के लिये मैं श्री गुप्ता को हृदय तल से साधुवाद देता हूँ।

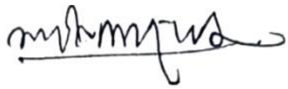

डाँ अनिल कुमार पाण्डेय,
बनारस
परास्नातक शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय संगठन

अनुक्रमणिका

1.	मंदिर: सत्यं, शिवं, सुन्दरम् का	11
2.	परवरदिगार का रहमोकरम: ईद	12
3.	मुरली में ऐसी मधुर तान हो	13
4.	एक ही चाह है... शक्ति स्वरूपा	15
5.	रहे शाश्वत मूल्य: जीने की मौलिकता में	16
6.	श्रद्धा और विश्वास का दीप स्थापित हो..	17
7.	जन जन के सासों में राम	18
8.	जन्मभूमि का मान - उसकी स्वतंत्रता	19
9.	जीवन का मोड, होता अनजान लहर सा	20
10.	आत्मविश्वास	21
11.	धीर बन: बूँद चुनो	22
12.	वो बात बने वतन में	22
13.	जरा शून्य सा बन जाओ	23
14.	अहंकार	24
15.	झूठ के बुनियाद पर	24
16.	जीवन का अर्थ कुछ और है	25
17.	विजय घोष का नाम : जीवटता	26
18.	वे लम्हे भूल, उडो उन सपनों में	26
19.	गुरू और शिष्य	27
20.	समय से बनती जीवन की परिभाषा	28
21.	भावी किशोर पीढियों के प्रति	29
22.	रुक जाना नहीं, तू कहीं हार के	29
23.	किशोरमन: ज्यों मधुमास के अमलतास	30
24.	कटार पकडना: रण चंडी बन	31
25.	सच्चे मित्र की पहचान	32
26.	साधक यज्ञ करो, पावन सृजन हेतु	33
27.	गुणसूत्र हूँ: मेल का	34
28.	बस ऐसी लहर देना है	35
29.	बहूमूल्य उपहार: मानव जीवन के	36
30.	जीवन संग हो: मूल्य का आभास	37
31.	झोपड़ी का मूल्य	38
32.	उच्छ्वास: मिलन के संताप का	39

33.	प्रतिबिम्ब: हमारे जीवन ज्योति का	40
34.	वक्त की पुकार	41
35.	बहती हवाओं का असर	42
36.	**समझ सकोगे इनकी मनुहार**	43
37.	विकार: चिंता और संताप की खान	44
38.	जलसा: सच्चे अर्थों में	45
39.	हकीकत समझ ले मानव	46
40.	**मत कर अभिमान: जीवन, बुलबुला समान**	47
41.	अरे, खोजो तो सही	48
42.	**नया अंदाज**	49
43.	**असर: नई तकनीक का**	50
44.	भीतर का विषधर	50
45.	**वक्त की मार**	51
46.	**जिंदगी की शाम में**	52
47.	**नीरवता**	53
48.	वक्त की हर शै गुलाम	54
49.	**सब कुछ समझ लिया हमने**	55
50.	इनका साथी: बस एकांत ही	56
51.	**संवेदना ओढे नकली चेहरे**	57
52.	**प्रारब्धों के पाषाण का बोझ**	58
53.	**एक ख्वाब अधूरा ओढे होता जीवन**	59
54.	मन्नत का धागा: दुखियारी का	59
55.	कितना अच्छा लगता जब ऐसा हो	60
56.	प्यार का फूल खिला था, मुझमें	60
57.	तमन्ना है: आना बगिया में आना मंजरी बन	61
58.	**शबनमी अहसास के धागे**	62
59.	वक्त खास होता है	63
60.	**मन भावों के लहरों में**	64
61.	**महत्व: रक्षाबंधन का**	65
62.	**शाश्वत रिश्ते: नियति के**	66
63.	कन्यादान का बेला- होता है अलबेला	67
64.	पीहर की यादें	68
65.	सूने सावन में आस लिए	69
66.	**पहले गुड्डी थी, अब चिड़िया हूँ**	70

67.	बस इतना ही बहुत है	71
68.	मेरे द्वार आये,पाहुन की तरह	72
69.	मैं ही नहीं, तू भी	73
70.	छेडना था, बस यूँ ही	74
71.	कुछ खास: चाँद की मुस्कुराहट में	75
72.	खुश है, नवांकुर	76
73.	दादी की पोटली	77
74.	गुजरे जमाने में फिर से.	78
75.	बचपन के वे गुजरे पल	79
76.	यादें जो, जेहन में	80
77.	आखिर दिल ही तो है	80
78.	कहाँ गये वे वक्त	81
79.	गुम गये बुनियाद में, जो	82
80.	जनम जनम का रिश्ता	82
81.	रंग जो ऐसा चढा	83
82.	होता है: सुत भी पराया धन	84
83.	संवेदन: धरा से जुडे रिश्तों का	85
84.	अंकुरण: नरम पत्तों में	86
85.	क्या जमाना आ गया	87
86.	आक्रोश: गुलाब के प्रति	88
87.	ऐसे कुछ तो लोग कहेंगे	89
88.	विश्वास है: छटेंगा तमस घनेरा	90
89.	माँ, एक अक्षरधाम है	91
90.	अब ये क्यूँ होता है?	92
91.	बस, सब्र कर	93
92.	भय गहराते, बेगानेपन में	93
93.	अहसास: पिता के वजूद का	94
94.	तमन्ना रगों में तो है	95
95.	नमन उस शिल्पी को	96
96.	कहीं दूर न जाना	96

मंदिर: सत्यं, शिवं, सुन्दरम् का

ए मन! सितारों की दुनियाँ में चल तो सही,
वहाँ पे किसी तरह का कोई बन्धन नहीं है।
सजा है, लगता किसी मेहमान के स्वागत में,
बहारों के रागिनी गान हैं, कोई साज नहीं है।
न कोई बुत है, किसी की बुतपरस्ती भी नहीं,
कोई तो है, उसके भव्यता का जवाब नहीं है ।1।

यहाँ की तरह वहाँ जाति धर्म का भेद नहीँ,
मंदिर के उदारता का कोई मिशाल नहीं है।
सभी को बुलाती महामहिम के स्वागत को,
वहाँ नियंत्रण, निमंत्रण का उपकार नहीं है।
सत्यं, शिवं, सुन्दरम् से होता चिर आलोकित,
अलौकिकता देखने का कोई अंदाज नहीं है ।2।

धर्म के प्रतीक मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और गिरिजाघर में ईश्वर का निवास नहीं रहता, वह इंसानियत की भावना में विद्यमान रहता है, इसलिए जो इस धारणा से समाज की सेवा करते है, वे देवत्व को प्राप्त करते है।

परवरदिगार का रहमोकरम: ईद

लाखों मुश्किलें आई, और लाखों रंजोगम झेले हैं,
रुस्वाइयों के चलते, जाने कितने मंजर झमेले हैं,
दुआएं कुबूल होने से बनें, ये खुशियों के मेले हैं,
गले मिलने का वक्त है, वर्ना झंझट तो बहुतेरे हैं,
इस खुशी के ईद में भूल जाएँ, आपस के रंजोगम,
फरियाद में माँग लें, परवरदिगार के रहमोकरम ।1।

बडे तकदीर और तकलीफ से जश्ने आज आया है,
मन्नतें पूरी होने पर ही ये खुशियाँ, सब ने पाया है,
तमन्ना यही हर रूह हो मन्दिर, दिल में इबादतगाह,
धडकनों में उसका पैगाम हो, और मोहब्बत बेपनाह,
अब खुशीयों के इस ईद में, भूल जाएं वे सब रंजोगम,
इस फरियाद में माँग लें, परवरदिगार के रहमोकरम ।2।

खुशीयों में जन्नत होती, हर खूनी जंग होते जहन्नुम,
जश्न लता के नग्मों से करें, औ रफी के छेडे तरन्नुम,
डॉ. कलाम के कलम का पढ़ लो, "विंग्स ऑफ फायर"
जलियाँ वाला काँड का फिर न जन्में जनरल डायर,
अब खुशी के ईद में भूल जाएं, आपस के रंजोगम,
इस फरियाद में माँग लें, परवरदिगार के रहमोकरम ।3।

मुरली में ऐसी मधुर तान हो

कान्हा! तुम्हारी मुरली में ऐसी मधुर तान हो,
सरगम के सात सुरों में फिर वही परवान हो।
'सा' से साथ चलें मिलकर उस सुन्दर राहों में,
जहाँ राधा के बोल से गंग जमुनी मिलान हो।
रे' से 'रुबाइयां' रोशन हों, मन्दिर के चौबारों में,
रसखान के सवैयों से, फिर 'मुरली' का मान हो।
कान्हा! तुम्हारी मुरली में ऐसी मधुर तान हो,
सरगम के सात सुरों में, फिर वही परवान हो ।1।

मस्जिदों से वैष्णव जन के पीर का पैगाम में,
जायसी के पदों में लिखे गोपियों का मान हो।
'ग' से गूंजे गुरूवाणी अब गिरजाघर के घंटो से,
बाइबिल के वचन में किसी कबीर का नाम हो।
कान्हा! तुम्हारी मुरली में ऐसी मधुर तान हो,
सरगम के सात सुरों में फिर वही परवान हो ।2।

'म' से मस्ती में झूमें, दीवानी मीराबाई का भाव,
उसमें मिले त्याग श्रृंगार का भी, मन से मान हो।
'प' से प्रीति चन्दन वन के सुगंध सा हो बहाव,
पावन चतुरसम का सब राह गली में छिड़काव हो।
कान्हा! तुम्हारी मुरली में ऐसी मधुर तान हो,
सरगम के सात सुरों में, फिर वही परवान हो ।3।

'ध' से धरोहर गुरुओं संग, हो ईशुमसीह का त्याग,
शहीदी के सभी आयोजनों में इनका भी नाम हो।
'नि' से निर्बाध बहे, निश्छल बहे प्रेम की अश्रुधार,
घृणा और निन्दा का, बिलकुल भी नहीं नाम हो।
कान्हा! तुम्हारी मुरली में, ऐसी मधुर तान हो,
सरगम के सात सुरों में, फिर वही परवान हो ।4।

नोट- "चतुरसम" एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य है जो चार द्रव्य (केशर, कस्तूरी,कंकोल और अगर को) मिलाकर बनाया जाता है। विशेष आयोजन पर इससे रास्ते और गलियों को सींचा जाता है।

ऐसा महसूस होता है कि धरा पर पनप रहे परमपिता की आराधना की विभिन्न तरीके ही समाज में कट्टरता की दीवारें खडी कर रहे हैं। प्रश्न यहाँ सरल या कठिन राहों का नहीं, बल्कि विसद व्याख्या द्वारा अपनी अपनी विधियों को वेहतर बताने का है, जो नकारात्मकता की ओर ले जाकर भीषण संघर्ष को जन्म देता है। क्यों न हम इन दीवारों को गिराने की प्रार्थना महामानव, सर्व शक्तिमान से करे जिससे कि सार्वभौमिक मानवधर्म रूपी गंगा की अमृतधारा प्रवाहित हो जिससे विश्व मानव समाज भी आसक्त होकर परस्पर सहकारिता की ओर कदम बढाये।

एक ही चाह है... शक्ति स्वरूपा

दुर्गे माँ! ऐसा भारत देश हमारा कर दे।
आरज़ू इतनी हर घर हो परोपकार कामना
दीनबन्धु अवतारी हो परदुख दूर भाव भरे।
वर्ग, जाति भेद की किसी में न रहे भावना,
इस हरी भरी धरा का हर प्राणी खुशहाल रहे ।। दुर्गे....।।

देश की जयकार करे, हर बच्चा भारतवासी,
देशप्रेम परिपूर्ण रहे, चाहे कश्मीर व काशी।
माँगूँ, आतुर होकर, सब ज्ञान के शिखर बनें
वीणा के सात सुरों से सब मन के तार जुडें।। दुर्गे....।।

कश्मीर देश का ताज, असम बने करधनियाँ,
कटक गाल पे सजे, बनके कानों की लडियाँ।
खाली झोली लिए खडा, उर्जा के मोती दे दे।
कन्याकुमारी पूर्ण हो, सभी अंग मुसकान भरे।। दुर्गे....।।

रहे शाश्वत मूल्य: जीने की मौलिकता में

जीवन का यह राह आसान नहीं, पर करना संघर्ष विराम नहीं,
ठोकरों को खाकर गिरकर भी, मत लेना रुकने का नाम कहीं,
सत्य शील के नये मानदंडों से, जन गण में सही रीत लाना है,
संतोष, सहनशीलता के गुण से सबके मन में रच बस जाना है,
जो महामंत्र महामना सा फूँके, और रखे जन समूह का ध्यान,
ऐसे लोग ही कर पाते हैं, अपनी राह के हर मुश्किल आसान ।1।

इस जग के रंग मंच पर, खलनायक अलग दिखा नहीं करते,
बाहर तन से पावन दिखते हैं, पर रनिवासों के राग वही बनते,
शायद यह पता नही होता, ऐसी करतूतों का अंत कहाँ होता है
वक्त जब न्याय की लाठी देता, तो इसका अंजाम बुरा होता है,
क्यों नहीं? बल विवेक, क्षमा, कृपा से बनते सब जन के प्राण,
ऐसे लोग ही कर पाते हैं, अपनी राह के हर मुश्किल आसान ।2।

श्रद्धा और विश्वास का दीप स्थापित हो

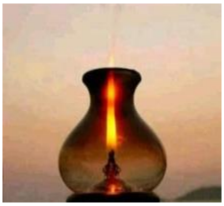

जब दिए में श्रद्धा परस्पर विश्वास,
सृजन शक्ति का तेल भर जाता है,
दीप को खुद में धैर्य धारण गम्भीर,
वास्तविक क्षमता ज्ञान हो जाता है ।1।

बाती तेल परस्पर त्याग भावना पर,
दीपक से सदज्ञान प्रकाश फैलता है,
संजीवन मूल्यों से पिरोये ज्योति के,
जीवटता से मद अंधकार भागता है ।2।

पर इसका सदुपयोग वही पर होगा,
जहाँ इस ज्ञान किरण का मान बने,
"सूरज को दिखाने दीपक जैसा" न
लघुज्ञान के उपहास का, सहन बने ।3।

अहंभावना के मद में, चूर मानव को
ज्ञानदीप दिखाना बिल्कुल ठीक नहीं
अहंकारी रावण पर पत्नी मंदोदरी के,
सनातन बातों का मनुहार सटीक नहीं ।4।

हमें दिव्य शक्ति का सहारा लेकर अपने से छोटे लोगों को उठाना है, उन्हें उन्नत बनाने और सुमार्ग पर चलाने का प्रयास करना है और अपने तुच्छ स्वार्थों को छोडकर उन्हें सुखी बनाने में अपने को सुखी महसूस करना है

जन जन के सासों में राम

सारे जन के प्यारे राम, तुलसी आराधन में राम,
सगुण भक्तिधारा के राम, नेत्रों में लगते अभिराम,
सबके अभिनंदन में राम, भरत के वंदन में राम,
कबीर के साखी में राम, संतो के हृदयबिलासी राम।
नीति के पुरुषोत्तम राम, केवट के अनुरागी राम,
अहिल्या के उद्धारक राम, भवभय निवारक राम,
सबके दीन दयालु राम, शबरी पे रहे कृपालु राम,
भगत उर चंदन में राम, लखन के वैराग में राम।
सुख के सारंगपाणि राम, जनक के अनुरागी राम,
दशरथ के राजदुलारे राम, सीता के प्राणाधारे राम,
कौशिल्या के ऑख तारे, सबके करुणासागर राम,
मारुति हृदयबसाते राम, धरा के हर कण में राम।
दुखों के दशमुखान्तक राम, मर्यादा के प्रेरक राम,
बापू के सपनों में राम, भारतमाता के सासों में राम,
सरयू के बूँद बूँद में राम, जन जन के वाणी में राम,
आनन्दों के दाता राम, भारत के भाग्य बिधाता राम।

सत, सदाचार, मानवीय भावनाओं के प्रति गहरी संवेदनाएँ और मर्यादा को स्थापित करने की शक्ति प्रभु राम के रूप मे थी, वह सदैव रहेगी। आज भी राम अंदर जिंदा है, वे प्रतीक्षारत हैं कि समय आने पर चुनौती दिया जाये।

जन्मभूमि का मान- उसकी स्वतंत्रता

यूँ तंत्र का मतलब है, बुना हुआ ताना बाना,
खुद का बुना हो तो, नहीं खुशी का ठिकाना,
क्यूँकि जुडा है इससे अस्तित्व, अरमान और सम्मान,
साथ महसूस होता है आनन्द औ झलके स्वाभिमान,
दूसरे के तंत्र में रहने से वह सुख नहीं मिलता,
क्यूंकि परव्यवस्था में खुद का मन नहीं भरता,
मन, मस्तिष्क दाब में होता, औ जाता आत्म-सम्मान,
ज्यों सोने के पिजडे का परिंदा नहीं देखता आसमान,
स्वतंत्रता में होता है खुले विचार का सरसाना,
इसमें जी करता सबका, आसमान में उड जाना,
सबको मन करता है कि हमारा अपना सुरभि चमन हो,
खुली दिगंत में बहने का मन करता यदि मधुर पवन हो,
देश के गौरव से जुडा, मेरे जन्मभूमि का मान,
इसके कण पर फिर चाहे क्षण क्षण जाए जान।
सीमा पर ताक रहे गिद्धों से बोलो ए, यहाँ से चले जाओ,
कब्र बनी तुम कायर साथियों के, उसको भक्षण कर जाओ।

जीवन का मोड, होता अनजान लहर सा

सागर के लहरों सा, यह सारा जीवन है,
हर पल, अनजानी घटना का प्रयोजन है,
कब तेज लहर आये यह पता नहीं होता,
कौन चपेट आये, वक्त भी न जता देता,
लौटती में कौन बह जाये, रहता बेनाम है।
नाविक सा संजीद जीना इसी का नाम है ।1।

जीवन का मोड, कोई निशान नहीं रखता,
खतरे औ रोमांच से भरा हर वक्त दिखता,
कौन राह चोटी पे ले जाये, पता नहीं होता,
घाट कौन चोटिल हो जाये खता नहीं होता,
फूंक कर कदम रखना भी होता बदनाम है,
ये जीवन संजीवन हो, जीना इसी का नाम है ।2।

आत्मविश्वास

घनघोर बरसात पश्चात ही धरा तृप्त होकर,
खुश हो मनहर हरियाली की चादर ओढ़ती है
चिलचिलाती गर्मी से तप्त खलिहान में रखी,
पकी फसल ही हर भूखे की थाल परोसती है,
युग युग से लिखे इतिहास याद दिलाते सदा,
हमें अहसास पनपते हर घटना परिणामों पर
हर भीषण संघर्ष बाद, मुस्कुराये सदाविजय
भरा अटल धैर्य हो और रहे विश्वास खुद पर ।1।

वह इठलाती लहर होती, जो पर्वत से टकराती,
आत्मविश्वास से भिड उसे चूर चूर कर जाती,
हर निद्रा में होता खून का नया शक्ति संचार,
नव ऊर्जा भरकर करता, नव युग का निर्माण,
बिजली जने सदा, जलशक्ति से भ्ररे बाँध पर,
भरा अटल धैर्य हो, और रहे विश्वास खुद पर ।2।

घुप अंधेरी रात बीतने पर नवसंचार भोर लिए,
दिवस का आत्मविश्वास लिए आगाज होता है,
निर्जन वन के वृक्षों में बैठे, परवाजों के नीड में,
जोश भरे मुक्त नव जीवन का अंदाज होता है,
अधर्म के अंत हेतु, लिखा होता है वनबासी राह,
भरा अटल धैर्य हो, और रहे विश्वास खुद पर ।3।

धीर बन, बूँद चुनो

तन का सिंगार हजार बार होता है,
प्यार तो जीवन में एक बार होता है,
नाव की चाल बढे, चप्पू की प्यार से,
धीर बन बूँद चुनो नवजीवन धार से।

कोई नहीँ विश्व में, जो प्यार बिना जी सके,
और गीत गाने वाले के, अधरों को सिल सके,
धीरे धीरे राग खींचो हरेक साँस के सितार से,
धीर बन फिर बूँद चुनो नवजीवन की धार से।

छाया की शीतलता पनपे, पेड के जिस्म से,
होंठ भी रसीले होते, गीत के राग किस्म से,
गात संताप दूर हो, बस स्वेद कण जाल से,
धीर बनके बूँद चुनो नवजीवन की धार से।

वो बात बने वतन में

पंख हो गये, उड लो उन्मुक्त गगन में,
केवल कह देने से अब न बनेगी बात।
हौसले की बात करनी होगी चिंतन में,
क्षितिज पार जाने, यूँ पैदा करें जज्बात।
घटाओं से भिडने का बल देना बदन में,
घोर अंधेरी रात मिटे, ऐसा जन्मे प्रभात। ।1।

जज्बे को सलाम, देना होगा तब मुझमें,
चाँद से मिलने मैं जब पार करूँ निर्वात।
जोशीले हों, जब पर फैलाए पूरे लगन में,
संघर्ष करूँ, जिस तरफ उठ रहे झंझावात।
परियों के किस्से से, वो बात बने वतन में,
गुड्डा गुड्डी की शादी में हो जाये ऐसी बात। ।2।

जरा शून्य बन जाओ

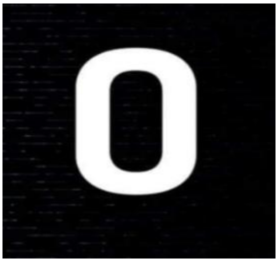

शून्य कुछ देता नहीं,
शून्य कुछ लेता नहीं,
इसमें है कोई अहंकार नहीं,
होता है कोई अलंकार नहीं,
मतलब लेन देन में रहे समदर्शी,
न होता सूक्ष्मदर्शी, न ही दूरदर्शी,
कोई मद नहीं, सो कभी बँटता नहीं,
जोड लो तो होती कोई खुशी नहीं,
इसे घटा दो तो भी कोई गम नहीं
गुणन में होता है इसका गुण इतना,
बन जाता शून्य सभी, ये पता इतना,
यह कभी नहीं बँटता है,
न ही किसी को बाँटता है,
बाँटने से इसका कुछ घटता नहीं
इससे बटने पर असीम ही मिलता,
हँसो नहीं, असलियत इसकी पहचानो
बटने में आकाश, नहीं राख हूआ जानो,
हम तुम सभी शून्य से ही आये हैं,
कुछ पाल बाद शून्य में ही जायेंगे,

अहंकार

यह अहंकार भी एक नशा है,
मुक्ति नहीं होती, जो फँसा है
घमंड विकार है, एक रोग ही है,
दूर रहे जो, वही रहता निरोग है,
नशे में रहे तो सपनों के राजा हो जाओगे,
उतरते ही बस खुद गड्ढे में गिरा पाओगे,
जो रखता है अपना ऐसा निर्मल मन,
धरा पर होता स्वर्ग सा उसका जीवन।

झूठ के बुनियाद पर

खातों के समंदर में यश भले ही गहराये,
उन लहरों के झोंके से सुख नहीं मिलता।
उस अडे पर्वत से भले आँधी बन टकराये,
हारे दिल के दरिया का ख्वाब नहीं बनता।
झूठ के बुनियाद पे कितने ही मिसाल बने,
सच के कुटिया का मान डिगा नहीं सकता।
चाँद की शीतलता से सूर्य भले ही शरमाये,
रात के गहराई से दिवस छिछला न बनता।
सच्चाई के बुनियाद पर कर लें झूठ के चर्चे,
बेरहम वक्त के थपेडों से, टिक नहीं सकता।
झूठ के बुनियाद पे सच की दिवाल हो जाये,
दुनियाँ की छत सा, वो इतिहास नहीं होता।

जीवन का अर्थ कुछ और है

जीवन में पाने के लिए कुछ तो खोना पडता है,
ऊँचे शिखर आरोहण में कुछ तो ढोना पडता है,
शब्दों को जनने में अर्थों को समझाना पडता है,
साँसों की लय में स्पंदन को उलझाना पडता है,
निशा से भिडकर जन्में भोर की लाली का फर्क कुछ और है,
जिसने किया संघर्ष उसके लिए जीवन का अर्थ कुछ और है I1I

हर वसन्त की शोहरत में अमराई ने त्याग किया है,
एक मोती के पाने में, हर सीपी ने कुछ माँग किया है,
हर वरदान में छिपी हूई है, पुरखों की त्याग तपस्या,
नवयौवन की हर अंगडाई में रची बसी है प्रभु सत्ता,
ध्वनियों की भाषा रचने में तरल तरंगों का तर्क कुछ और है,
जिसने किया संघर्ष उसके लिए जीवन का अर्थ कुछ और है I2I

भौंरे वहीं मडराते, फूलों पर जिसमें मुस्कानें भरती हैं,
उठती गिरती लहरों पर माँझी की पतवार मचलती है,
मंजिलों के जोखिम राहों पर, जब पौरुष आगे बढता है,
इतिहास पलक पावडें देती, फिर भूगोल नमन करता है,
हर पल जीने के सुंदर संसार का अर्थ ही कुछ और है,
जिसने किया संघर्ष उसके लिये जीवन का अर्थ कुछ और है I3I

> जीवन अपने आपमें विकट पहेली है और इसका सारा तत्व समझना बहूत सरल भी हैI नारियल के खोल की तरह जितनी कठिन है जिंदगी तो उसके गूदे जैसी मीठी और रसभरी भी है I

विजय घोष का नामः जीवटता

इस जग के महाभॅवर में न जाने,
कितनों के जीवन नौकायें डूबीं हैं।
नौकायन में उठते गिरते लहरों पर
मस्त पतवारों की, चाल अजूबीं हैं ।1।

जीवन के आनन्द वही लूट सके हैं,
जो कोलम्बस हो, बाधा पार किया।
चढे ज्ञान की बलि बेदी पर, जिसने
सिद्धांतो पर छलना स्वीकार किया।।2।

ठोकरों को खाने में ही मानव को,
सीख से विजय घोष में नाम मिला।
जब जीवन है, इसे जीने का संघर्ष है,
जिया वही है, जिसने स्वीकार किया ।।3।

वे लम्हें भूल, उडो उन सपनों में

जब बर्फीले वादियों में खोकर हम औ तुम,
देवदार के जंगलों में, चेहरे दीदार करते थे।
दिल कहता है भूल जा, उस स्याही रात को,
जिसे खुले ऑगन में तन्हा बिताया करते थे
चाँद अपनी मुस्कुराहट से वो दर्द उभार देता
जब फैली रश्मियों से ये आँखे चार करते थे ।1।

सपनों के उडनखटोले से उडते हम औ तुम,
मंद ठंड में परदार की उडान दीदार करते थे।
दिल करता है भूल जा, वो कल कल वाद को,
सहारे जिसके उन सासों के लम्हें जोड लेते थे।
जिनमें उतारा था कराहटों से सजी वो दुनियाँ,
अपना भी है कोई इसमें, ये सोच दर्द पी लेते थे ।2।

गुरू और शिष्य

दे,
जो,
ज्ञान,
ध्यान,
संज्ञान,
सतकर्म,
सद्धर्म का,
सिखाये कला,
जीने की कला,
आये बाधाओं में,
रह के मर्यादाओ में,
असर बताए औ बचाए,
अज्ञान अंधकार से बचाए,
सतगुरू सन्मार्ग दिखाता है,
सही का पहचान बतलाता है
गुरू कुम्हार, शिष्य घडा है,
इसका पद ईश से बडा है,
सगुण भक्ति में बंदनकर
रामचरितमानस रच,
कही राम धैर्य गाथा
दशरथ पुत्रव्यथा
वीरोचित कथा
पथ वो उचित
हों मर्यादित,
औ आभार,
आगार,
जो
दे।

समय से बनती जीवन की परिभाषा

दुनियाँ में ऐसी कोई चीज नहीं
असंभव, हो तुम्हे जिसको पाना,
पर गर्दिश समय के चक्कर में,
कभी न मन को खुद उलझाना,
पाओगे वे सब अपने कौशल से,
ध्यान रखना, हिम्मत न खोना ।1।

यह सच है कामयाबी पर दुनियाँ,
तुम्हारे साथ कदमताल करती है।
साधना में स्वयं जागना पडता है,
और तब ये पूरी दुनियां सोती है।
बीते बुरे वक्त पे, कभी नहीँ रोना,
चिंतन करना, पर हिम्मत न खोना ।2।

समय ही ग़ढती, जीवन की परिभाषा,
यही पूरी करे, हम सबकी अभिलाषा।
यह समय का चक्र, है चलता रहता,
इंतजार कभी नहीं किसी का करता।
तू सफल होगा बस, हार नहीं मानना
कोशिश में रहना, हिम्मत न खोना ।3।

भावी किशोर पीढियों के प्रति

कल के खिले हो प्रसून तुम, सदा बहारें लाते रहना।
सुरभि भरी भीतर तुममें, गली गली महकाते रहना।
कंटक पथ मिल जाए, तो खुश होके मुसकाते रहना।
इस बगिया के पुष्प अनोखे, इसका मान बढाते रहना ।1।

एक रूप, पर हो अनेक, मिलकर कदम बढाते रहना।
संभव राहें हो दुर्गम, तुम सदा धैर्य से चलते रखना।
उल्टी हवा में आगे बढ, साहस का मान बढाते रहना।
'प्रकाश' के सलोने सपने तुम, इसे साकार बनाते रहना ।२।

रुक जाना नहीं, तू कहीं हार के

सदा गति है, लिखा धरा की नियति में
जिससे पल में बदले विचार बहार के।
दौडे है, पहाडों जैसे सब बोझों को ले,
देती है सलोनी बूंदे हमें अपने फुहार के।
सिखाती, न रुकूं, गर खुशी की हो इति,
मन से रूक जाना नहीं तू कहीं हार के ।1।

आजीवन धडके, यह दिल हम सबका,
दे रहे, सम्बल रक्त संचार मानव गात के।
सिखाती रुकूँ, तो वजूद न हो किसी का,
औषधी भी सारे व्यर्थ हैं, इस संसार के।
नीले अम्बर में उडना है, अपने बल भर,
तो मन से रुक जाना नहीं तू कहीं हार के ।2।

किशोरमन: ज्यों मधुमास के अमलतास

बना लो, जीवन का यह साज,
ये मौका फिर कभी न पाओगे।
इस सलोने अवसर का यूँ लाभ,
तुम, कभी न फिर ले पाओगे।

किशोरता है वसन्त का अमलतास,
पवन उर्जा बन अभी ही दे पायेगा,
मानव जीवन का यह अमोल उजास,
सत्कर्म बिन फिर व्यर्थ हो जायेगा।

समझ कर इस जीवन का हर क्षण,
अब से सुस्वप्न बनाने में लगना है।
प्रति पल को मूल्यवान समझ करके,
अन्तर्मन की ऊर्जा से जुट जाना है।

मंजिल भी, सहज निकट आयेगी,
साहस भर कर, यदि पैर बढाओगे।
भारत माता का मान बढेंगा तब ही,
अपने हाथों से यह तस्वीर सँवारोगे।

कटार पकडना: रण चंडी बन

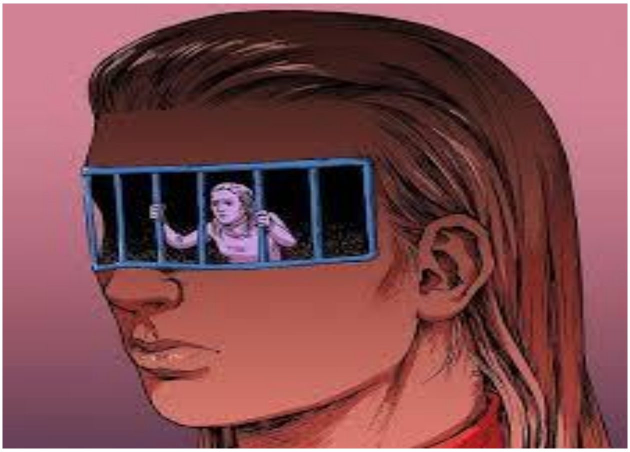

जब कलुषित दूषित विचारों की दुनियाँ से,
धरा पर दुर्योधनों के लालन पालन होता हो,
बल गर्व में पितामह, गुरुओं की गरिमा भूल,
सत्तामद में असहाय का अपमान करता हो,
तब गांधारी नहीं, न्याय की रणचंडी बनना है,
पट्टी फेंक दो आँखों का, शोषण नहीं देखना है ।1।

जाहिलों की भीड बढे, जो चुपके सहन करोगी,
शकुनि के टेढे चालों में हर वक्त फंसी रहोगी,
केशों से कोई मचले तो जेहन से प्रण होना है,
बाजू की हड्डी चटका दे वो कटार पकडना है,
दृढ इच्छा शक्ति से, बुराइयों की सेना भागेगी,
कुरीति की पट्टी से अब शोषण नहीं देखना है ।2।

सच्चे मित्र की पहचान

माना कि तुझे जीवन में बहुत दुख मिले हैं,
पर किसी पल में सुख के फूल भी खिले हैं,
वक्त बडा बली है, हर टूटे दिल मिलाता है,
जो नजरें बचाता था, वह फिर गले लगाता है ।1।

निराश हो के ऐसा कुछ कभी नहीं करना है,
सूख गई इस बगिया को फिर हरा करना है,
धैर्य की इंतहा में, हमको मिल-जुलके रहना है,
दुखों से घबराकर तुमको कायर नहीं होना हैं ।2।

तू कुछ भी समझ पर तेरा बचपन का मित्र हूँ,
तेरी आत्मा में जो अंकित वो साक्षात चित्र हूँ,
भावावेश में तू जो करे वो कभी करनें न दूँगा,
सच्चे मित्र की पहचान, मै कभी खोने न दूँगा ।3।

मित्रता का बीज बोयें, पर इस बात का कितना अमल कर रहें हैं.. कहीं यह सच नहीं कि हम मित्रता का बीज बोने का समय नहीं निकाल पा रहे। छलरहित मित्रता में आनन्द अवश्य आता है, जब उसके लिए पारस्परिक विश्वास और अपनत्व की उष्णता का बीज पास में हो।

साधक यज्ञ करो, पावन सृजन हेतु

हम अपने गुलिस्ताँ से, सपने संजोये थे,
उदगार के माला में, शब्दपुष्प पिरोये थे,
सुंदर सपनें, नौनिहाल नैनों में संजोये थे,
एकता के धागे में, रंगों के मोती पिरोये थे ।1।

भक्ती के चन्दन से, बिखरीथी ये गंधन,
अनेकता का रूप में, उधड रही थी चिंतन,
शांति के सपन लिए कपोत जो उडाया था,
धमनियों के लहू को मिट्टी में मिलाया था ।2।

हम नहीं जाने, धर्म का दलदल हो जायगा
मानवता का हाथी, इस तरह फॅस जायगा,
आत्मीयता का बंधन, स्वार्थ से टूट जायेंगे,
हैवानियत चोला ओढ, अब इंसान हो जायेंगे ।3।

सोने की चिडिया ऐसे में असहाय हो गई है,
आस्था के पिजडे से, अब विश्वास खो रही है,
धरती के स्वर्ग पे अब, राक्षस मचल रहा है,
अन्तर्विरोध के आग से चेहरा झुलस रहा है ।4।

खुशहालों की इस धरती पर उग रहा है गम,
सुरमयी शाम पे हो गया अंधियारे का संगम,
ऐसा ही रहा तो, अब हम सब बिखर जायेंगे,
देदिव्य इतिहास में, यूँ काला अध्याय लायेंगे। ।5।

अवसाद को छोड, अब साधक यज्ञ जगाओ,
निहित सृजन बल से, देश का मान बढाओ,
ये वक्त नहीं, आपसी लडाई में टूट जाने का,
आदर्श धर्म अपनाना है,पावन उद्देश्य पाने को। ।6।

गुणसूत्र हूँ: मेल का

,

मुझे
जन्म देना,
अथवा न देना,
खुद के सोच का,
या कुल के सोच का,
भले गूढ विषय होता हो,
कोई प्रश्न खडा करता हो,
पर इसका एक है उत्तर,
कर सकता निरूत्तर,
तुम हो जन्मदाता
पर विधाता
तुमसे पूछता है,
या, ये तुम दोनों से,
क्यूँ रसीले नज्मो से,
होठ पर लाये थे हर्ष,
अब क्यूँ बढाते कर्ष,
मैं युगल भ्रूण हूं,
दोनों का खूं हूं
जन्म देना,
मुझे।

बस, ऐसी लहर देना है

शब्द तो भाव के भूखे है,
अभाव है तो पूरी तरह रूखे हैं,
भावना है, तो निश्चित उसमें शक्ति है,
शक्ति का मनुहार ही उसकी भक्ति है,
सशक्त संबोधन से संज्ञाये दौडी आती हैं,
जोश भर देने से फिर शक्ति सहित आती है,
शब्दों के भाव से ही उसमें वाण का प्रभाव है,
विशेषण के आवेग से आता उसमें वेग प्रवाह है,
उमंग भरे शब्दों से, मधुमास भी बने वनजारा है,
शब्द की शक्ति से अभेद्य राजमुकुट भी हारा है,
शब्दभेदी वाणों से राजा पृथ्वीराज का आगाज है,
इसी से मिटे मुहम्मद गोरी का साम्राज्य है,
भाव भरे निशब्द में यदि रहे सर्वनाम हैं,
रस रंग से मुकुट का करते काम तमाम हैं,
मत समझे शब्दशक्ति से अर्थशक्ति बलवान है,
यह तभी तक टिके हैं जब तक रचना मेहरबान है,
शिवाजी के जोश से छूटे औरंगजेब का पसीना है,
भाट होकर नहीं, हमें चाणक्य बनकर जीना है,
पहाड़ों को जो डुबो दे, बस ऐसी लहर देना है,
मदहोशी के रात में अब ऐसा खबर देना है,
क्रिया के वेग से तडपती उमंग प्रभात हो,
शब्द मुक्त मात्राओं पर जब आघात हो
दिशाहीन चुटकुलों में सशक्त विधा बने,
"कबीर" या नीरज की, वही विधा बने,
"महादेवी" के पथ-राही से हो मगन,
हों "भारत भारती" जन का मनन।

बहुमूल्य उपहार: मानव जीवन के

सारे धर्मो के मनीषियों का रहा मनन,
जग के जीवों से कीमती मानव जीवन,
यदि हो उसमें सुंदर और स्वस्थ काया
जीवन सादा और, न व्यापै कोई माया ।1।

चिंता रूपी साँपिनि, जब इसे डसती है,
तन जर्जर होता, जब व्याधि सताती है,
बेशुमार धन वैभव, फिर काम न आते,
जिसे समझ न आया, बाद में पछताते ।2।

विकार से मुक्ति पा, शीघ्र बेदाग होना है,
सूर्य की गर्मी औ शुद्‌ध हवा ही गहना है,
चाँद सी शीतलता में खुद को ढलना है,
नियति के इनाम ये, इनसे जीवन होना है ।3।

जीवन में प्राय: बना रहता है, एक अधूरापन, जो बार बार उठकर टोकता है- यह वह राह नहीं, जिन पर चलने की सोची थी और यह जीवन भी अभी अधूरा है। परमशक्तिवान ईश्वर ने सबको समुचित व्यक्तित्व के साथ तदनुसार सब गुण दिया है।

जीवन संग हो: मूल्य का आभास

हे दया निधान, जब तुमने दुनियाँ बनाया,
फिर जोडे बनाकर, धरती पर उसे बसाया
ज्यों हवा संग साँस, निराशा के संग आस,
पानी साथ प्यास, शब्द के साथ आकाश,
धरा साथ दी उपज, कंपन के संग आवाज,
जीवन संग दिया, निष्ठुर मौत का आगाज,
मेघ साथ गर्जन, और मोर के साथ नर्तन,
दिल के संग धडकन, सजने के लिए दर्पन ।1।

ऐसा न हो जाए, जीवन के लिए वायु न हो,
बदला मौसम हो, पर बदला जलवायु न हो,
प्यास है जल न हो, धरा है पर उपज न हो,
मुख पे न करुणा, पुरइन है पर कमल न हो,
दया है, धर्म नहीं, दिल है पर धडकन न हो,
ज्ञान है समझ नहीं, बुद्धि है पर मंथन न हो,
प्रीत के गीत, गीत संग जीवन संगीत न हो,
दुख के बाद सुख, मन साथ मनमीत न हो ।2।

हे करुणा के सागर, अब इन पर दया करो,
ये जीवन निर्जीव मशीन न हो, कुछ तो करो,
कैसा वह संसार, जहाँ जीवन का सार न हो,
दंभ, द्वेष पाखंड रहित सब हों, कुछ तो करो,
क्षणभंगुर जीवन, संग मूल्य आभास तो करो,
सागर में मचले रत्नों से, दर्शन लाभ तो करो,
दाता के हों दिल से रिश्ते, कोई रंक पिसता हो,
हाथ मदद में बढे, किसी तन पे खून रिसता हो ।3।

झोपड़ी का मूल्य

नदी तट के कुटियों की छतों पे शबनम थी,
तेज हवा के सिहरन से, वह आँख मूँदे थी,
कडाके की ठंड थी, अलाव पे ठंड पसरी थी,
बादलों से छन के, मुट्ठी भर धूप बिखरी थी ।1।

निशा न होने से, प्रभा की छटा निखरी थी
ठंड का मजा लेने सखी संग रानी चली थी,
नौकाविहार बाद, इन सभी का बुरा हाल था,
कुहासे में, उन सबमें खून जमे सा हाल था ।2।

बचने का उस वक्त, उपाय नहीं सूझता था,
उन्हें तट पे कुटियों का भाव न लगता था,
सखियों! इन्हें आग लगाओ ये आदेश दिया,
ठंड दूर हुई, तब सबने घरों में प्रवेश किया।3।

प्रजा का दर्द सुनके,रानी से राजा क्रुद्ध हुए,
रानी ने कहा, इन कुटियों के कोई दाम हुए,
राजा ने आज्ञा दी, अब तुमको वहाँ रहना है,
दुखियों के संग काम कर, ये पीड़ा सहना है।4।

मेहनत से जब इन सबकी कुटी बनाओगी,
तो इनके कुटियों के मूल्य समझ पाओगी,
रानी ने भूखे हो, श्रम से सब कुटियाँ बनाई,
तब झोपड़ियों का, सहीं मूल्य समझ पाई ।5।

उच्छ्वास: मिलन के संताप का

ये झील सी आँख में आँसुओं की भावनाओं से,
कंपन में झूलती लहरों का गुबार जब भी रहा,
तभी इस पूनो के चाँद सी भाने वाली मुख की,
हँसी पे बलखाती लटों के, दर्द में उलझा रहा।1।

बडी देर तक डर समाया रहा मुझमें जाने क्यूँ,
पिय मिलन में संताप का उच्छ्वास गिनता रहा,
पता नहीं वो दिल से उठी हूक थी, पर थी बेचैन,
यादों की चादर पे नींद के बहाने मैं जागता रहा।2।

उफ भी मयस्सर न हुआ, सोच इस बेहाली पर
तुम क्या बीती होगी, यही अहसास करता रहा।
पर कपोलों पर, जरा भी शिकन न दिखी मुझे,
तुम्हारी इस जादूगिरी पर बस यूँ दाद देता रहा।3।

अब दरवाजे को वह थाप देनी है, जो हर इंतजार को सुबह के मिलने पर आत्मविभोर करे। वे पौधे लगाने हैं, जिनकी टहनियाँ दोपहर के छनती धूप की ताप को कम करने की सामर्थ्य हो। तेज कदमों से बाहर निकलते समय एक बार उन दीवारों को पलट कर देखना है, जिनसे "चलता हूँ" बोलने की आदत छूट गई है। वही पुराना इंतजार कायम करना है जो लौट न आने तक मुँह सटायें रहता था और दरवाजे, पंखा और दीवाल घडी से घंटे बीतने की आहट आती थी।

प्रतिबिम्ब: हमारे जीवन ज्योति का

मैं तेरी देवी हो जाऊं, यदि
तुम पावन मन्दिर हो जाओ।
साधना बन जाऊँ, मैं तुम्हारी,
जो तुम ध्यान मग्न हो जाओ ।1।

पूर्ण चंद्र की मैं बन सकूँ चाँदनी,
अगर चकोर बन तुम मन भाओ।
लज्जा बन जाऊँ अपने नैनों की,
यदि सलोने मनभावन हो जाओ ।2।

तेरे दर्पण की प्रतिबिंब बनूँ अगर,
मेरे जीवन की ज्योति, बन जाओ।
ज्वाला बन जाऊँ, तेरी प्रतिभा की,
यदि कर्म क्षेत्र में पावक बन जाओ ।3।

तेरा साथ निभाऊॅ, मैं जीवन भर
यदि तुम सृजन बनके आ जाओ।
अपना तन अर्पण कर दूँ, यदि तुम
अपना मन न्योछावर कर जाओ।4।

बीता हुआ हर लम्हा जिंदगी को समझने का एक अच्छा मौका था और आने वाला हर लम्हा जिंदगी को जीने का दूसरा मौका है।

वक्त की पुकार

निश्चल खडा पर्वत, दृढता का द्‌योतक है,
चलता कालचक्र ही लयता का संसूचक है,
वर्षा के हास में खुश धरा का, परिहास है,
वसंत के आवास में ही सुरभि का वास है
हवा के दिशा संग बदले वही समझदार है,
व्यवहार में बदलाव ये वक्त की पुकार है ।1।

नम्रता मानव जाति का महामूल मंत्र है,
अतिरेक में अकडने से बिगडते परितंत्र है,
मुसीबत की आंधी में जो झुका वही बचा,
सब्र किया जो कभी वक्त ने भी उसे रचा,
पतझड में जो जुडा, उसका हुआ श्रृंगार है,
व्यवहार में बदलाव ये वक्त की पुकार है ।2।

जाति धर्म छोड, इंसानियत धर्म जोड लें,
संवेदनायें ओढ ले, युद्‌ध का सोच छोड दे,
रूह मिलाकर जुडें, हर एक के उत्कर्ष में,
नहीं किसी की भलाई, आपसी संघर्ष में,
पंछी को करो प्रेम, तो वो लुटाता प्यार है,
व्यवहार में बदलाव ये वक्त की पुकार है ।3।

बहती हवाओं का असर

युगों युगों से वेदवाकय रही है यही,
वरदान और श्राप के बने मानक ही,
असरदार होते, सभी जीवन में सही,
महसूस होते, सब के कहानी में अभी।

वाह करने से काम में आता उत्कर्ष,
आह करने से बनें यह दुश्वार जीवन,
कमजोर को सताओ तो निकले हाय,
फिर चाहे जितना पिलाओ सजीवन।

पेडों पौधों पर भोजन पानी का नहीं,
बह रही हवाओं का भी असर होता है,
हौसला बढाने से,बढता तभी मनोबल,
बददुआ देने से बुरा भी असर होता है।

जब सभी दवाएं हो जाती हैं बेअसर,
दिलसे दी दुआ, का भी असर होता है,
दवा खाने से न कभी देखा चमत्कार,
दुआ पर चमत्कार का असर देखा है।

वैद्य जब छू लेते हाथ की नाडियों को,
औ सहानुभूति से पीठ पे दें थपकियाँ,
जो प्रेम से कहते तुम हो जाओगे ठीक,
चेहरे खिल उठते, थम जाती सुबकियाँ।

समझ सकोगे, इनके मनुहार

उडते तैरते परवाज कलरव व कूक के,
साँस उच्छ्वास में मनहर गीत भरकर,
पठार तिब्बत का, प्रशांत सा गहरापन
शस्य श्यामला धरा पर, घाटियाँ देकर,
नियति ने हम मानव पर किया उपकार,
धरावासियों को दे दिया अनुपम उपहार ।1।

झूमते बादलों ने दी पावस की रिमझिम,
कौंधती तडित दिखे, झाँकती ज्यों दाडिम,
जहाँ जन्म लिया, दी गंध उस माटी की,
कर्मक्षेत्र में दी मेधा, सोच में दिया उडान,
हाथों को शक्ति, भरी आसमाँ सा उदगार.
सरल बनोगे, तो देख सकोगे ये मनुहार ।2।

अगर उदार बन मनहर हवा का झोंका दे,
मन भावों को, निर्मल जल का कलरव दें,
चंदा से शीतल समर्पण,सूरज से तेजी लें,
रजनी के तारों सा जनमन में दें उदगार,
प्रज्ञा औ श्रद्धा का फिर से पाओगे उपहार ।3।

जीवन सौंदर्य से ओतप्रोत है, बस महसूस करने के लिय अपना नजरिया बदलने की आवश्यकता है। क्यों न हम, अपने काम में मगन मधुमक्खी को देखें, छोटे बच्चे के मुस्कुराते चेहरे को देखे, बारिश की सोंधी-सोंधी महक को महसूस करें, बहती बयार के स्पर्श को महसूस करें। निश्चय ही इससे अपने जीवन को उसके अधिकतम संभाव्यता तक जीने की जिजीविषा उत्पन्न होगी।

विकार ही: चिंता, संताप की खान

एक आदमी ने सभा बुलाई, लगभग पचास लोगों की भीड आई,
अपने हाथ लिया एक कागज, बिल्कुल झक्क, सफेद कागज,
भीड में खडा होकर चिल्लाया, हाथ से कागज को हिलाया,
बोला,कागज पे क्या दिखा, जबाब मिला,कुछ नहीं लिखा,
उसने जेब से पेन निकाला, पेन में इंक भरा था काला,
उससे कागज पे दाग बनाया,अब कागज को फिर हिलाया,
कहा, कागज पे कुछ दिखा है, उत्तर मिला, धब्बा दिखा है,
अब आदमी खूब चिल्लाया, यह धब्बा, सब को भरमाया,
यह सब दुःख का निशान है, चिन्ता औ संताप की खान है,
परमपिता परमेश्वर ने सफेद कागज की तरह,
आनन्द उडेला है जग में, परम उदार की तरह,
वो आनन्द है, प्रकृति का आनन्द,
देखो तो, जी भर उगते सूर्य,चन्द
देखो कभी अबोध बालक की खिलखिलाती हंसी,
बगिया में चहकते परिंदो और महकते फूलों की खुशी,
कभी दीन दुखियों, विकलों के संतप्त आत्मा पर,
अपनी उदारता और दयालुता का मरहम लगाओ उस पर,
अरे! यह काला धब्बा सारे काले करतूतों की खान है,
फँसना नहीं, इसमें सारी ठग विद्या ही विद्यमान है,
है सारे रोगों की जड, पर लोग समझते इसमें शान है,
तभी तो, सारे समाज और जगत फैल रहा विकार है,
घिरते असाध्य रोगों से, फिर कोसते सारा संसार है,
चेत जाओ, अब भी, मत ऐठों अपनी काली करतूत पर,
नियति ने दिखाई ताकत, कुछ नहीं बचेगा तेरे वजूद पर।

जलसा : सच्चे अर्थों में

ये,
जश्न
होता हैं
अहसानमंद
होना, खुदा के,
नवाजा जीवन के।
यह उनका नहीं होता,
करता जो दंभ का दिखावा,
व्यक्तियों से करता छलावा,
नीचा दिखाते, हीनता जन्म देते,
और जो हिंसा, करते, संघर्ष कराते,
इतिहास साक्षी है, मंथरा के विचार ने,
पैदाकिया विकार, कैकई के व्यवहार में
जलसे में द्रौपदी का व्यंग्य वचन ने,
बदले का आग लगाया अंग-अंग में
सारा आदर तार-तार हो गया,
भाई-भाई में रार हो गया,
उनमें छिडा महाभारत,
समझना है नजाकत,
नाजुकता वक्त की,
मांग न रक्त की,
हो मिलन का,
अरमान का
जलसे का
ध्येय,
ये।

हकीकत समझ ले मानव

लोगों को,
ये कहते, सुने हैं,
जब तक हर एक श्वाँस
और, नि:श्वास के बीच गति,
और गति के बीच रहती यति है,
मानव गात में स्पंदन है, निस्पंदन है,
तब तक जीवन के पल-पल अभिनन्दन है,
इस जीवन के महासागर में वेग है,
उसके जल के ज्वार में तेज है,
उसके नील गगनांगन में,
उस चाँद का उद्वेग है,
वाद्य में राग है,
विराग है।
अविराम है, पर, जब
लग जाता है,पूर्ण विराम,
होता गति और यति समान,
लय चल देता अनन्त के निलय में,
प्राण निर्मोही हो अनुराग विराग, भूल जाता,
इस धरा पे बचता कुछ भी नहीं शेष,
बस नाम ही बच जाता है शेष,
सब कुछ दूर, बहुत दूर होता,
मन निर्बंध होता,
कहते सुने हैं
लोगों को।

मत कर अभिमान: जीवन, बुलबुला समान

तूने कुछ अपने, सुख सुविधाओं को पाने,
मनोहारी नीली छतरी की, उदार धरा को,
नियति के उपकार और उपहार को, जाने
कितने बेदर्दी से नाश किया, कुछ पाने को।
नदियों ने इठलाना छोडा, अंधों के जिद पे
भावों ने रचना त्यागा, झूठे वैभव पाने को
विषैली गैसें दी, सरल हवा के पावन मन में,
उर्वरक ने बंद किया, जैवी खाद परम्परा को ।1।

धरा का सावन छीना, और नभ का नीलापन,
वन के वीरानापन ने छीन लिया आक्सीजन,
संगमरमरी दीवानों ने, तपित किया पर्यावरण,
मानव होके तेरे मन ने तांडव का किया वरण।
मन किस स्तर का जो लाशों का गीध बन गया,
सीता पर शहीद हुए, जटायु का नाम डूबा दिया,
मानवता की परीक्षा है, इस जाति का मान बनो,
बुलबुला सा मानव जीवन, इसका सम्मान करो ।2।

पुरानी पीढियाँ भावुक थी, इसलिये संबंध को महत्व देती थी, बाद में लोग प्रयोगवादी हो गये और सम्बन्ध का लाभ उठाने लगे। अब तो व्यवसायिक हो गये, अगर लाभ है तो ही सम्बन्ध बनाते हैं।

अरे: खोजो तो सही

कोलाहल या होशोहवास में, भागते आदमी में,
नीरव से होकर गुजरा एक इंसान खो गया है,
बुनियादी जरूरतों में, धन जुटाने के लिप्सा में,
जीवन रक्षा दावे का कहीं पैमाना खो गया है,
युँ दबा पडा हो नस्ति मे, भटका है बस्ती में,
सूने में भटकी मानवता हो, अरे खोजो तो सही।1।

रैपर पर गारंटी के शब्द समूह में रखे सामान
कहीं वो पावनता होने का निशान खो गया है,
जंगल में फैले चोला ओढके सरल आदमी का,
कहीं ताल में कुटिलता का जलकुंभी बो रहा है
छिपके बैठा हो इस पैदावार की खरपतवार में,
चूस रहा हो खून अपने का अरे खोजो तो सही ।2।

बादलों में बह रही हवा को जमीं दिखती नहीं,
धरा पे रहवासी आँखों में आसमां खो गया है,
सगे सम्बन्धियों के निभती पावन रीतियों में,
कहीं छिपके आस्तीनी साँप विष उगल रहा है,
लेते और छोडते हुए साँसों बीच बैठ साँस रोक,
कहीं भूखा भेडिया हो, अरे कुछ खोजो तो सही ।3।

पहले लोग मरते थे और आत्मा भटकती थी........ और अब आत्मा मर चुकी है लोग भटक रहे हैं.......

नया अंदाज

अब के वे मूल्य नहीं रहे, जीवन मूल्य तो था,
सो उन सब के जीने का अंदाज तो अलग था।
पक्के मकान भले न थे, खपरैल का घर तो था
सो संग रहकर, सहन का अंदाज तो अलग था।
कोई मुफलिस गुजरा है, संजीवन बनना तो था,
वह नजर अंदाज न हो, वो अंदाज भी अलग था।
कठिन दौर रहा हो, पर वह जीवन तो सरल था,
सुख दुख साथ सहने का अंदाज वो अलग था ।1।

अब मूल्य है पर, वह सब जीवन मूल्य बदल गये,
उन फ्लैट के दीवारों में जीने का अंदाज आ गया,
गाँव की माटी साथ चौपाल चबूतरे गायब हो गये,
खोये मैदान, जिम में मशीनों का अंदाज आ गया।
नजर अंदाज करना, बना रहा आधुनिकता का फैशन,
अब तो खून में विकार ही, खून का अंदाज आ गया।
सब दिशाओं से आते हैं कुटुंब के खास आयोजन में,
अब पति पत्नी में फैमिली का नया अंदाज आ गया ।2।

सभ्यता के निर्माण की प्रक्रिया में चीजें तेज गति से होने लगी। जीवन बदला, विकसित हुआ, परन्तु कुछ खो भी गया। अब इंसानी जीवन प्रकृति का अंग नहीं रहा इस बात ने मनुष्य को विकास की उपलब्धियों के साथ उसे संकुचित और स्वार्थी भी बनाया।

असर: नई तकनीक का

लगता है, पुराने ग्रंथ के किसी पन्ने पर
समाधान मिल जायेगा, उस समस्या का।
अरे! नजर डाल लो उस पाट्य पुस्तक पर,
शंका के बिंदु पे दाग लगाओ पेंसिल का ।1।

कुछ सोचो यदि, वे प्रश्न लीक से हटके है,
बैचैन औ परेशान होना न समाधान कोई,
ठहरे शान्त मन से हल खोजना डटके है,
सही ध्यान देने से, मिलेगा परिणाम कोई ।2।

पर, भटकता रहा मन, चैन न मिला इसको,
तभी सहेली बोली, नये तकनीक के युग में,
तुम कुछ न करो, नेट से खोलो गूगल को,
सर्च करो, पाओ पूरे विवरण कुछ ही पल में ।3।

उसकी बातों में आ मैंने खोजा, उत्तर पाया,
सोचा यूँ नई उम्र में सौगात लाया ये जमाना,
भाव हीन हम हो गये, सब वर्चुअल बन गया,
हाथ मिलना तो दूर, औ मूक हो गया जमाना ।4।

भीतर का विषधर

विषधर बैठा चाहे कान पर, या भीतर हो,
या जीभ से निकले जहरीले बयान पर हो,
दूसरों में बिष बोता, या खुद अंदर फैलाता,
खुद झुलसता ही है औरों को भी झुलसाता,
दूसरे घुलते रहते, घुले खुद भी भीतर भीतर,
घर या समाज, खतरनाक होता है विषधर ।1।

अजगर से मोटे होते, जल्दी सरक नहीं पाते,
अंदर निगले प्राणी को, हजम वहीं कर जाते
दांत जहरीले न हो पर देह विष भरा होता है,
अस्थि व चर्म हो किसी का, अंदर गला देता है।
जंतु या मनुज हो सदा बचकर रहना दिलवर
शहर दर शहर उजड़े भले बिल में हो अजगर ।2।

वक्त की मार

जब भी,
मार करता वक्त,
दर्द होता बडा सख्त,
लगाता जब यह ठोकर,
दुख दूर न होता फिर रोकर,
ऐसे में ये सगे भी पराये लगते,
नकली स्नेह देकर वे बेगाने लगते,
फिर ये वक्त फिसले वैसे,
रेत, बँधी मुट्टी से जैसे।
सीधी हो जाती है,
वो टेढी काठी
जब भी,
चलाती लाठी।
ये घूमते चक्र सा है,
युँ कहें, बहते पानी सा है,
यह कभी किसी का सगा नहीं होता
सोचा कभी महान योढा सिकन्दर का,
उसे घमंड था अपने मुक्द्दर का,
अर्जुन को अहंकार था
गाँडीव के प्रहार का,
भीलन किया पस्त,
यूँ करे वक्त।

जिंदगी की शाम में...

जब से जीवन की डोरी से, मैंने, तेरे संग का गठबंधन जोडा है
चलते इन राहों पे जाने कितने,सुनामियों ने हमें झिझोंडा है।
न जाने तूने कितने गम पिये, इस दुनियाँ के सारे सितम सहे
मेरी बगिया के खुद माली हो, खून से सींच फूलों को रंग दिये।

चली ये साँसे उस मुकाम पर, क्षितिज का सूर्य हुआ थकान पर,
हमारी हथेलियों के पकड खुशी ही आधार है, जीवन सफर पर।
हाथ में हाथ दे हम मुस्कायें, सहारा बन राह की नई पहचान दें,
सम्बल है तो जीवन आस, मैं गुमसुम हूँ कहाँ होगा परिहास है।

जीवन के अंतिम पडाव पर आप सोचना हे कि हमें क्या क्या मिला, कौन कौन सी उपलब्धियाँ हमारे हिस्से में आई तो चेहरे पर खुशी छलकने लगेगी। तब लगेगा कि स्वजनों का प्रेम, सुन्दर किताबें, खूबसूरत कुदरत-सब तो है अपने पास। बस एक बात सोचनी होगी कि हमारे लिए संतुष्टि का स्तर क्या है। हम जीवन को किस अर्थ में तलाश रहें हैं?

नीरवता

जीवन की आपाधापी से दूर रह नेकु देख ले,
इस सुकून के पल में, खुद का खोज खबर ले,
शांत व्योम देखें और करें नियति का आभास,
चिंता के अँधेरे में तुम्हें जरूर मिलेगा प्रकाश,
चित्त स्थिर हो जायेगा, आ जायेगी सार्थकता,
ममता की छाँव जैसी सुकून देगी ये नीरवता ।1।

निन्यांबे के चक्कर में वे इंसानित खो रहे हैं,
सत्य औ आनन्द की राह में काँटा बो रहे हैं,
स्वार्थ साँपिनि हो, आपस में विष फैला रही है
धन पाने के लोभ से, सबको शैतान बना रही है,
शांत मन से सोचो, तो परिभाषा गढेगी मानवता,
आनन्द आ जायेगा, और वरदान बनेगी नीरवता ।2।

लूट खसोट से, ये जन मन जरा दूर हटकर सोचो,
सारे दंभ, पाखंड, झूठ से जरा निर्लिप्त होकर देखो,
सब यहीं धरा रह जायेगा, सोचो क्या साथ जायेगा,
जन परहित, प्रेम धर्म है तेरा बस वही संग जायेगा,
तू अब समाज शिरोमणि बन जा छोड दे दानवता,
जग अकेला आया है और जायेगा, ये बताती नीरवता ।3।

चिंतन और मंथन का यही ठीक समय, स्थान है,
आनन्दमयी चित्त बना लो बस इसी में कल्यान है,
शांत मन से बैठ सोच ले बस तू क्यूँ ये सब रूठे हैं,
त्याग तो दे ये सब, राग रंग दुनिया के सब झूठे हैं,
यदि संत मनु भाव जगा लोगे, पा जायेगा ईश्वरता,
झूठी दुनियां कुछ न देगी, अपना ले थोडी नीरवता ।4।

वक्त की हर शै गुलाम

ज्यों हवाओं का रुख, बदलता रहे पल पल,
कभी उमस भरी होती वो कभी लगे शीतल,
धूल भरी होती कभी वो, कभी बहती निर्मल,
लू के थपेडों से यूँ कभी बदन को करे घायल,
मिज़ाज के साथ जो चलते, होते वही सफल,
दुखी होते वो कभी, खुद जिद में जाते निकल। ।1।

ये वक्त भी बहुरुपिया सा बदले अपनी शकल,
इंसाँ संग देता जो ये, कांटे भी बनते सरस फल,
घूरे के दिन बदलते, ज्ञानी भी होते दिखे पागल,
रंक भी हो जाते राजा बंदरों से सिंह हुए घायल,
बसंत से रूठी खुशबू, बरखा से हार गया बादल,
समझदारी उसी में है, समय के साथ बहता चल। ।2।

जिंदगी उसी को आजमाती है, जो हर मोड पर चलना जानता है, कुछ पाकर तो हर कोई मुस्कुराता है, जिंदगी उसी की होती है जो सब खोकर भी मुस्कुराना जानता है....।

सब कुछ समझ लिया, हमने

मानव के भीतर की पशुता,
पशुता के अंदर की सभ्यता,
पशुओं के भीतर की मानवता,
उसमें मानवता भरी महानता,
अब सब देख लिया है हमने,
हमको भी समझ लिया, हमने ।1।

सभ्य बनाने में लगी मजहबें,
फिर क्यों गायब है, मानवता,
पशुओं पर नहीं लिखी इबारतें,
फिर क्यूँ उनमें होती मानवता,
शक है, नियति से लिया, तुमने,
उसको दंभ से गुमा दिया, हमने ।2।

इनका साथी: बस एकांत ही

बीते और आने वाले कल के बीच फैला,
यह सन्नाटा, निस्सार जीवन को रचता है,
इसमें एकाकीपन के रथ पे हर कोई चढ,
बीते बातों मे खोके, एक संसार बुनता है।

थामा जिन उँगलियों को, सुखी रहेंगें कल,
उनके सपनों में अपनी खुशी लुटा दिया।
इन डगमग पगों का, बनता न कोई लाठी,
अब सूनेपन को अपना साथी बना लिया।

उन सबके अस्तित्व का आधार था बनना,
ऊपर जाते सीढी का पायदान बना लिया।
नियति ने इन झुके कंधों से ढोते भारों का,
लाचारी बस इनको ही आभार बना लिया।

बीते वैभव ने छल से संध्या पे दिया एकांत,
तू बना है इस बेला का सच्चा साथी नितांत
अबोले होके वे नौनिहाली बृतांत जान लिया,
अब हमने महसूस किया, तुमने परख लिया।

संवेदना ओढ़े, नकली चेहरे

लोगों के दिखे नकली चेहरे से,
पता नहीं चलता दिल की बात,
मतलब पर बनाते मासूम चेहरा,
उल्लू सीधा होते ही करते घात।

चेहरे पर नकली चेहरे लगाते है,
पेट में घुसकर आघात लगाते है,
बाहरी लोगों से हम कैसे लड लें,
जीतना कठिन है दिल के नातों से।

रिश्तों में चाहे जज्बात दिखला ले
भावना के ज्वार में कैसे नहला लें,
दिल के धडकन को वे रौंद डालेंगे,
शमशान में लाकर राख कर डालेंगे।

अब जिसे दिल का टुकड़ा मानो,
समर्पित कर दो अपना दिन रात,
भूले पलभर में, जो दिया सौगात,
संवेदनाओं पर, वही लगाते घात।

प्रारब्धों के पाषाण का बोझ

बस्ती में मेरे जने पुतले, जब टुकडे **पाहन** बन जाँए,
तब **निर्बल** जीवन को बूढ़े प्रारब्धों में ढोना पडता है।
कल के जन्में जब नौनिहाल छोटी सोच के हो जाँए,
तो जर्जर तन को तब स्वेद धारा सा रोना पडता है ।1।

जिन सुख हेतु संघर्षों की मैने नई कहानी लिख दी,
डग़मग़ पग से अब उन छालों को समझाना पडता है
वे खुश रहें, यही मिन्नत रब से, न कोई शिकवा,
अब खुद्दारी से जीने मुझे ये ढंग अपनाना पडता है ।2।

आज फ्लैटनुमा चौखटों में घुटता आदमी जिदंगी का स्वाद भूल गया है। भूल गये हैं, घर और मकानों के बीच का फर्क। ऐसे में हमें इसी जिंदगी में खोजना होगा, उस अर्थ को, जो मनुष्य को मनुष्य होने की प्रेरणा देता है।

एक ख्वाब अधूरा ओढे होता जीवन

गुजरा होगा कैसा वह शैशव उसका,
बिन पिता के साये में जो जीता हो।
फिजा छीन लेती, उस मासूमियत को
जब उसका सलोना सावन रीता हो ।1।

ख्वाब अधूरा लिए होता वह बचपन
जहाँ बिन मौसम के अंकुर फूटा हो।
अभावों के साये सा रहा किशोरपन,
आक्रोशों ने मिल के जवानी लूटा हो ।2।

तिरस्कारों से पुरस्कृत रहे अधेडपन,
बोली अनबोली में मतलब उल्टा हो।
एक ख्वाब अधूरा ओढे होता जीवन,
जहाँ हर कर्तव्यमें स्वार्थ ढूँढता हो ।3।

मन्नत का धागा: दुखियारी का

सोचो तुम्हारी सलामती के लिए,
किस दर पर मत्था न टेका होगा।
उस दुखियारी माँ ने ममता में आ,
जाने कैसे दुआओं को मांगा होगा।
अशक्त होने पर भी गोद में ढोकर,
आरजू में अश्रुओं को बहाया होंगा ।1।

इस धरा पे वही एक सजीव देवी है,
खुश करके तुम्हें वरदान पाना होगा।
पता नहीं, कितने दरख्तों में रखे दिये,
चौतरफा मन्नत का धागा बाँधा होगा।
मानो न मानो सिरमौर बनाने में वही,
अपना तन-मन, सर्वस्व लुटाया होगा ।2।

कितना अच्छा लगता जब ऐसा हो

पुत्र बहुत दिनों बाद, जब अपने गाँव जाये,
घर पहुंच कर माँ पिता पत्नी से मिल पाये,
अच्छा लगता है, तब बच्चा छाती लग जाए,
माँ की सोंधी चुपड़ी रोटी में ममता को पाये ।1।

जब राह में चलता राही, गर्मी से व्याकुल हो,
वक्त के झंझावतों से, उसका तन आकुल हो,
अच्छा लगता है जब कोई छाया बन के आए,
पीडा को हरे और "मैं हूँ न" कान में कह जाए ।2।

यदि लंगुटिया यार लम्बे अरसे बाद मिल जाये,
बचपन की बातों से मन पूरा मसगूल हो जाये,
अच्छा लगता है, जब बातों से आँसू आ जाये,
एक थाली में खायें और फिर भावुक हो जाए ।3।

प्यार का फूल खिला था, मुझमें

छिड गयी, जब से वो बात बन्धन की,
कुछ सलोने सपन आने लगे थे मुझमें।
उपवन में छू लेता जब भी कलियों को,
अजीब सी गुदगुदाहट लगती है मुझमें।
गुमसुँ हो जाता उन चर्चा के खयाल पर,
भ्रमर, भी वो गीत सुनाने लगे थे मुझमें। ।1।

पहली मुलाकात मेरी जब से हुई तुमसे,
तभी से प्यार का फूल खिला था, मुझमें।
चितवन को समझा, झुके इन नयनों ने,
दिल भी बगावत, करने लगा था मुझमें।
गेसुयें लहराई गालों पर, पहली नजर में
डसा ऐसा, बस नशा छा गया था मुझमें। ।2।

तमन्ना है: आना बगिया में मंजरी बन

जब मेरे जीवन में, सुहावने वसन्त थे,
तब तुम भी गुलाब सा मुस्कुराती रही।
माना, अब ये पतझड शुरू हो गया है,
पर वो सर्द भी परवान चढ सताती रही।
अब लता बनके सर पे छाया तो कर दो,
इस बियावां वन में ये कोयल,डराने लगी ।1।

इस मौसम में बागवाँ कहीं चला गया है,
फलों को लुभाकर, चिडियाँ चुग कर गयी।
पीले पत्ते भी गिर के जमीं पे छा गये है,
अब इन पे, काली कंटीली झाडियँ आ गयी
उन भौंरो के सुहानी गुंजन कहीं खो गई है,
बनाये घोसले की रौनक अब खत्म हो गई ।2।

ऐसे में फव्वारे सा जल बनकर बिखर लो,
मेरे अरमान की ये उगी घास हरी हो जाये।
बुलबुल सा बन फिर टहनियों पे फुदक लो,
ऐसे पतझड में पेड पे नव पल्लव आ जाये।
महकेगी बगिया फिर मंजरी बन कर उग लो,
इस वसंती बगिया का फिर बागवाँ आ जाये ।3।

आँखों की नैसर्गिक सौंदर्य, उसमें विद्ममान आँसुओं के कारण होती है। खुशी का मूल्य, उसको प्राप्त करने में हुए दर्द के कारण बढता है। अगर जीवन में सब कुछ माँगने या चाहने से मिल जाता, तो परिश्रम अथवा संघर्ष की कीमत नही होती और दुनियाँ में "भगवान" को याद करने की जरूरत नहीं पडती।

शबनमी अहसास के धागे

बूँदे शबनम की जब भी फूस के तिनके पे होती हैं,
वे कितनी सख्त हों, अपने अक्स को भिगो लेती हैं।
भावनाओं के ठंडे झोंके जब इनके बदन को छूती हैं,
बेपनाह मुहब्बत से इनको आगोश में दुबका लेती हैं।
खुद सांसों की गर्माहट में ये वक्त को सँवार देती हैं,
सर्द रातों की रुख्शती में, ये इशारों से काम लेती हैं ।1।

उजाले की झुटपुटे में, आंब सर्द हो जमीं पे गिरती हैं,
हीरों की बात कम होगी, जब ये मोती बन चमकती हैं,
जमीं पे आये शिकन को, ये मासूम हो काबू करती हैं,
गोधूलि के आफताब बेला में स्याह मेहताब पिरोती हैं,
जन्नत भी क्या आभा देगी जो यह गुलाबों में देती हैं,
बागवाँ खुश होकर चुन लेता, जो मुहब्बत संग देती हैं ।2।

पुरइन पात के चिकनाई में न घुलती हैं न टिकती हैं,
अपने शबनमी नगमों में बस, इनको अहसास करती हैं,
यूँ खेतों के हरियाली में श्वेत मोती सा हिसाब होती है,
जलसे में मशगूल होके फिर मजमें से दो चार होती हैं,
मासूम ओस की बूँदें, किसी का इश्के इजहार करती हैं,
हमसफर की आरजू में, ज्यों खुद को कुर्बान करती हैं ।3।

वक्त जब खास होता है

जब लरजती लहरें, बनती नदियों की तडपन,
तो डूबी हुई उन बूदों का मन उदास होता है
मन मचलें है फिर उनके, सागर मिलन को,
लगता है, मोतियों से वो मन उजास होता हैं,
सुकून पा लेते हैं, मेरे बन्द आँखो के वे आँसू
मनभावन सुर लहरी का जब प्रवास होता है,
प्रिये! ये सुहावन सावन दे जाते हैं सुकून तब
तुम्हें पास होने का जब वक्त खास होता है ।1।

हवायें तुम लाती क्यूँ हो, बादलों बीच गर्जन
इनसे तो ये मन मयूर, फिर नाच उठता है
चाहतों के इंद्रधनुष पर, सवारी के भाव से,
मन सतरंगी होने का लिबास खास रहता है
तडपती बूँदे जब टपकती है, इनके बदन पर
तब नर्तन के चाल का भाव, खास रहता है
प्रिये! ये सुहावन सावन दे जाते हैं, सुकून तब,
तुम्हें पास होने का जब वक्त खास होता है ।2।

मन भावों के लहरों में

मन भावों के लहरों में बह,
जो तेरे तट पर आया होता।
मोती बन तू भी आ जाती,
यदि सीपी बन आया होता।

प्रभा बिखेर, रवि मलीन बन,
जब संध्या ढिंग आया होता।
तू सुरमयी आभा हो आ जाती,
मैं नील गगन सा आया होता।

पूर्ण कला में चन्दा, रजनी से,
सितारों संग रास रचाया होता।
शीतलता बन छाती तनमन में,
मदमस्त पवन बन आया होता।

जब भावनाओं का आवेग धैर्य का तटबंध तोड दे और हमारे वजूद को अपने में समा लेने का प्रयत्न करे, तो हमें आत्मन को उन भावनाओं के साथ छोडकर, खुद कुछ पल के लिए उन्मुक्त हो खुली हवा में विचरण करने देना चाहिये। जब जीवन उस दर्शन के संग लयबद्ध हो जाये तो पुन: आत्मविश्लेषण कर लेना अपेक्षित है। इस मन:स्थिति में लिया गया निर्णय दूरगामी लाभ हानि की दृष्टि से अधिक श्रेयष्कर होगा।

महत्व: रक्षाबंधन का

रक्षाबंधन,
उत्सव है बंधन का,
संबंधन का, अनुबंधन का,
अवलंबन और आलंबन का,
अधिगमन और अधिग्रंथन की,
आलोकन और अवलोकन की,
पावन प्रेम मरजाद की,
आराधन फरियाद की,
ये सूत्र हर प्रीत की।

मनगीत की,
सिर्फ भाई बहन का,
उत्सव नहीं है रक्षा का,
यह सहकार का त्योहार है,
इसमें स्नेह के संग मनुहार है,
आकंठ हर्ष में, सांस्कृतिक उत्कर्ष में,
रक्षक और रक्षित के दायित्व में,
संघर्ष माप है आये खतरे का,
मान है, कतरे कतरे का,
रक्षाबंधन सिखाता,
निश्छलता।

शाश्वत रिश्ते: नियति के

माँ या पा,
दोनों में दर्द छिपा,
रहता दिल के टूक में,
उदगार ज्वार से उठे हूक में,
मायातंत्र में फँस के झँकझोरते है
अतीत तार जुडने से आँसू बहाते हैं,
अनुकूल हालात की आरजू में रो पडा है,
या फिर तुम्हारी सलामती के लिए अडा है,
होंठ संपुट खुलने से ही माँ व पा निकला है,
तो फिर जमाने ने, इन शब्दों को क्यों छला है,
कहते हैं, किसी कुतर्क से गुस्से में जब माँ होती है,
दिल बैठाकर आँसुओं को छलकाकर वह रोती है,
पा रोता नहीं, पर नेत्रों से सदा पीता रहता गरल,
थोडा अंदेशे में दिल बैठा लेता है चाहे सरल,
चंद शब्दों या हरकतों से सताना नहीं,
गाँव या वन, करना कोई बहाना नहीं
ये करते, मन्नतें परवर्दिगार से,
ध्यान मग्न बडे उद्‌गार से,
घर चाहे भग्न हों,
वो, आखिर में हैं
माँ या पा। ।

जीवन में पिता का होना ईश्वर की उपस्थिति है: हर दु:ख में प्रार्थना बन जाते है-पिता और सुख में अनुग्रह।

कन्यादान का बेला-होता है अलबेला

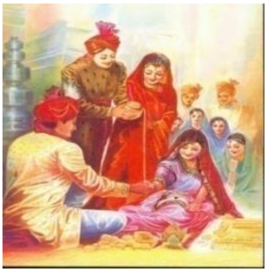

कन्यादान का बेला ही अपने में अलबेला है,
उस छोर भ्रमरगीत, तो इधर गुंजन मेला है,
उमडी भावों के मेले में, गंगाजली अकेला है,
हथेली की मेहंदी में बसा, त्यागों का रेला है ।1।

बेला इस ओर शाश्वत, संस्कार निर्मलता है,
बसी मिथिला वसुधा की पावन चंचलता है,
उस ओर अवध धरा पर सरयू की माटी है,
संयम की तपोभूमि है, पंचवटी की घाटी है ।2।

कल था माँ पिता का साया,मित्रों का मेला,
कुछ पल बृद्धों संग, फिर रहना पडे अकेला,
भावी जीवन नौका का, ये जीवन साथी होगा,
अपने ताकत के चप्पू से, इसको खेना होगा ।3।

इस निर्जन वन पे खुद बस्ती बसानी होगी,
जंगल में मंगल होता, ये गीत सुनानी होगी,
स्वार्थो की बलि देके, लोरी तान सुनाना होगा,
नौनिहालों के लक्ष्यों पर, मंगल चुनना होगा ।4।

पीहर की यादें

मेरी सोच से बेटी के, इस जीवन में दो जन्म होता है
पहला इस धरा संसार में, दूसरा पी का घर होता है।
पीहर में नीम की डाली के झूले में सावन की कजरी
घर ऑगन में फुदके, माँ की सोनचिडी पापा की गौरी ।1।

खेल में छोटे भइया को छकाती, मजे से थपकी देती,
नाश्ते पे संग खाती, टी.वी. प्रोग्राम में अपनी चलाती,
साइकिल से घूमती, घुमाती उससे धक्का भी लगवाती,
बडे भाई से रूठती, पापा को बताती, फिर डांट पडवाती ।2।

अब ससुराल में बाबुल का गलियां खूब याद आतीं हैं,
बीते दिनों की यादों में, सिर्फ ऑखें अश्रु ही बहाती है,
पीहर से हर लाडली का ससुराल, सलोना सपना होता है,
उस सपने के अंजान से, जज़्बाती रिश्ते रखना होता है ।3।

पीहर में अल्हड़ता थी, अब सपने को सुखद मंजिल देना है,
सक्षम औ जागरूक होकर, सब सार्थक सोच को लेना है,
चोटी पर पुत्र को पहुंचाकर, दोनों कुल पवित्र कर देना है,
ये परिवार सुसंस्कारित कर जीवन को शाश्वत कर लेना है ।4।

सूने सावन में आस लिए

उदास मन के उद्वेग से, हवा क्लांत है,
परिंदो की अनबोली से, उपवन शान्त है,
पसरी नीरवता से, ये मद्धिम रविकांत है,
हमदम संग नहीं, झूले में हम एकांत हैं ।1।

पेंग भर लूँ जरा, महक सी बहकती हूँ मैं,
भौंरा बन आओ मुझ पे,यूँ दुबकती हूँ मैं,
सूने सावन में आस लिए, सुबकती हूँ मैं,
विरह वेदना से दिन रात दहकती हूँ मैं ।2।

बदरा सा आ जाओ, मिलन की चाह लिए,
गजरा सा महको, बस आँखों में प्यार लिए,
सब रंग भर जाओ, फिर सूने आँचल में मेरे,
कान्हा बन आ जाओ रास रचा ले साथ मेरे ।3।

पहले गुड्डी थी, अब चिड़िया हूँ

पापा, भइया ने हमारा गुड्डा ले लिया,
माँगती हूँ वह फिर जोर-जोर रोता है।
अब हमने प्यारा गुड्डा उसको दे दिया,
उसके रोने से हमारा दिल धडकता है।
अब मैंने आपके हाथ, हथेली दे दिया,
"छोटी चिरैया" के गाने का मन होता है ।1।

ये उंगलियाँ, आपकी मुटठी में है दिया,
अक्कड बक्कड खेलने, का जी होता है।
परियों के लोक किस्सा क्या सुना दिया,
अब उन सपनों में खोने का जी करता है।
पकडो ये दोनों बाहें, अब झूला मिल गया,
अब सावन घटा में पेंग भरने, मन होता है ।2।

पापा, मैं कुछ सालों में बडी हो जाऊँगी,
जीवन में आता परिवर्तन ये समझाऊँगी,
पहले गुड्डी थी चिडिया हूँ, औ बनूँगी परी,
तुम्हारे सपनों की, उन्हे लेके उड जाऊँगी।
छूटा सब, गुड्डा, चिडिया और झूले का पेंग,
कैसे भूलूँ, बस याद करूँगी, याद आऊँगी ।3।

बस, इतना ही बहुत है

भले ही, मजधार में, जीवन की नौका हो,
मैं हूँ, और तुम हो, बस इतना ही बहुत है I1I
नीरव में ठहरी नाव, साहिल का पता नहीं,
तुम रहोगे खेवनहार, बस इतना ही बहुत है I2I
धीमी गति कश्ती का, चप्पू पास नहीं है,
जोश रहे बाजू में, बस इतना ही बहुत है I3I
इधर हम बल से, उधर तुम खुद धैर्य से,
जल में चप्पू चलायें, बस इतना ही बहुत है i4I
इस निर्जन थल में, हर्ष का पर्व मनायेंगे,
हम तुम, चिंतन है, बस इतना ही बहुत है I5I
बस्ती बसेगी हौसले से, जो न उजडेगी
सासों में गर्मी है, बस इतना ही बहुत है I6I
जहाँ हम रहेंगे, इतिहास भी वहीं रचेगा,
भरोसा है हम पे, बस इतना ही बहुत है I7I

थोडी देर थम कर यदि उस कल्पनाओं में सोचोगे, तो माफ कर देंगी सारी भूलें, वे दीवारें जो कब से देख रहीं हैं तुम्हें खुद से दूर जाता हुआ। चिपका लेंगी तुम्हें फिर से; एक बार 'सॉरी' बोलकर तो देखिए।

मेरे द्वार आये, पाहुन की तरह

कभी नयनों में आये थे, सपनों की तरह
अब जीवन नैया में हो, पतवार की तरह,
माथे पर अब बिंदी लगा ली तेरे नाम की,
कभी मेरे गाँव आये एक "पाहुन" की तरह,
सालिगराम सा पूजा था, मेरे मन मंदिर ने,
पर अब समा गये "मन के मीत" की तरह ।1।

मेरे घर से होती गली में तेरा नाम लिखा है,
जो बीतते हो गई, मील के पत्थर की तरह,
तेरे नाम की माला पहन आयी थी द्वार पर,
अब रख दिया, अलमारी में निशानी की तरह,
जो चंद सिक्के मुझ पर न्योछावर जो हुये थे,
हमने बटुए में रख लिये हैं, विरासत की तरह ।2।

ढीले कर दिए, अतीत के स्नेह बंधन,
बसा लिए दिल में, परमेश्वर की तरह,
हिमालय सा बना, इस पावन घर को,
तुम्हें शिव समझ, बनी गौरा की तरह,
सजाने के लिये, कुछ भी न पास मेरे,
दिल दे दिया तुम्हें, अलंकार की तरह ।3।

मैं ही नहीं, तू भी

मैं तन्हा ही जागा नहीं, प्यार में,
तू भी रातों न सोयी, होगी जरूर।
मैं करवटें बदलता रहा हर रात को,
तेरे बाहों की चूड़ियाँ खनकी जरूर।

नायाब है तू हमने, यह माना मगर,
दिल दिया है कोई दिल्लगी नहीं की।
हो भरोसा न मुझ पे, तो जा पूछ ले,
कोई न तेरे मन की मीत, होगी जरूर।

जब भी आयी होगी तुझे याद मेरी,
तेरी तन्हाई तो दमकी होगी जरूर।
पर ये बताओ हमारे प्यार के बंधन,
की बात लोगों में फैली होगी जरूर।

आह तक नहीं की, जाने क्या बात हुई,
कोई मजबूरी तुम्हारी तो होगी जरूर।
उन सुबकती आँखों की भरी बज्म से,
इस दिल की दशा देखी, होगी जरूर।

आज अरसों से मिलने आई हो मुझसे,
ये वक्त आया है, करते शिकवे गिले,
अब कितने तूफान रहे हमारे चाह में,
वादा है, कभी यूँ जुदा न होंगे जरूर।

छेडना था, बस यूँ ही

तुम्हारी अदा पे तो गुलिस्ताँ कुरबाँ है,
हरी डालों पर यह बुलबुलें मेहरबान हैं,
ये गेसुएँ जब लहराती तो कहर ढहाती,
वो क्यूँ झाँकता फिर, अपनी गिरेबाँ है,
ऐ प्रिये! तुम इतना यूं रूठ गई हमसे,
छेडना था बस मुझे, यूँ ही कह दिया ।1।

बरखा की बूँदों से, सिहरता है ये बदन,
हरे भरे सावन दमकाए तुम्हारा दामन
बादलों की घटाएँ छेडते बावरे मन को,
हवाओं के झोंको में, बहक जाये कदम
ऐ प्रिये! तुम इतना यूं रूठ गई हमसे,
छेडना था बस मुझे, यूँ ही कह दिया ।2।

तुमने बालों में गजरे क्यूँ नहीं लगाये,
चंदन सा बदन आज क्यूं महका नहीं,
तुम्हारी ये जुल्फें क्यूँ वैसे ही बलखाई,
फिर ये चितचोर जाने क्यूँ बहका नहीं,
ऐ प्रिये! तुम इतना यूं रूठ गई हमसे,
छेडना था बस मुझे, यूँ ही कह दिया ।3।

हमें जिंदगी में वह विश्वास लाना है जो हर कदम पर जिंदगी की चाप को उमंगो में भर दे, और वह अर्थ खोजना है जो मनुष्यत्व होने की प्रेरणा दे। वह पल चुराने हैं जो उन संवेदनाओं को जन्म दे जिससे हम जिंदगी में बडी से बडी जंग जीत सके। चलते समय सडक पर जगह ढूंढनी है जो चाय की प्यालियों के साथ कोई खूबसूरत सी कविता की पंक्ति रच दे।

कुछ खास: चाँद की मुस्कुराहट में

आज हो रहा है, कुछ नया अहसास है
हरियाली में मस्त सावन का मास है,
मेरे हृदयाकाश में हो रहा उल्लास है,
चाँद की मुस्कुराहट में कुछ खास है।

गाये कजली, बैठ बादल की कश्ती में,
शर्म से दुबक जाए तारों की बस्ती में,
ढूंढे मुझे, सखी संग गली की गश्ती में,
क्यूँ संग भीग रही फुहार की मस्ती में।

चाँद के चेहरे पे तेरे नयनों को निरख,
लाल गालों पर, तेरे गेसुओं को परख,
मनुवाँ मचल रहा सुन पैरों की थिरक,
चाह रहा नाचूँ मैं सुन मेघों की धमक।

चमेली फूल बन, तारे तुझे महका रहे,
बरखा बहार बन, कुछ खास बना रहे,
आरजू है इतनी, मुझ संग ले महकना,
जी भर मिल लूँ,बस वहाँ मुझे बहकना।

खुश है नवांकुर

भोर का तारा कह कर पुकारूँ,
या गोधूली लौ, दिन ढलने का
क्यूं यह हँसीं रात चुप हो गई,
वक्त है रजनी के सजने का ।1।

शक है, रवि निशा से निकला,
या भानु सिंदूरी आसन पे चढ़ा,
जुटी रात तारों संग दीपदान में,
दीपराज का नवांकुर खुश हुआ ।2।

सजना! ये होठ बंद नहीं करना,
ये वक्त नहीं है, मौन रहने का
मौन कलियां, सोचे गुल खिलाना,
चिंता, बस दिन के तापमाँ का ।3।

दादी की पोटली

कुछ बात है, बचपन की,
कुछ खिलवाड़ है, लडकपन की,
गांव से दादी आई थी,
वहाँ से अपने संग कपडे की पोटली लाई थी,
उसमें सोंधी इमली, देशी आम का अचार था,
उससे हमारा लगाव अपार था,
बडी पोटली में कई छोटी छोटी पोटलियाँ थी,
किसी में महुँए की कुछ सूखी कलियाँ थी,
किसी में छोटे हुक्के के लिए मीठी तम्बाकू,
कहीं कभी फल, सब्जी काटने के लिए चाकू,
जब हुक्के के चिलम में तम्बाकू और आग रखती थी,
हुक्के के पेंदे नारियल छेद से पानी में गुडगुडाती थी,
मुझे बहुत मजा देता था, उसका गुडगुडाना,
डांटती थी, मुझे कहती मत यहाँ अभी आना,
मैं मिन्नत करता, दादी और गुडगुडाओ,
वह कहती, तुम सौ तक गिनती सुनाओ,
मैं सुनाता और भूल जाने पर दादी से बुलवाता,
तब दादी हुक्का गुडगुडाती और फिर मैं भी गुडगुडाता,
दादी फिर डांटती, कहती नशा बुरी चीज है,
पोटली से सिक्का निकाल, कहती खरीद ले कोई चीज है,
फिर नीचे जाता, खरीदता चूरन टाटरी वाला,
अम्मा तब तक बैठी रहती मेरे लिए लेकर निवाला,
क्या वह बचपना था, और क्या मौज मस्ती थी,
बरसात के वे दिन थे, और हाथ में कागज की कश्ती थी।

गुजरे जमाने में, फिर से...

<u>सजीव सी मूर्तियाँ (राधा-कृष्ण मंदिर, मुर्धवा, रेणुकूट, सोनभद्र,उ.प्र.)</u>

गुजरे हुए जमाने में फिर से,
गुजर जाने को जी चाहता है।
जाने क्यो सुरगुटिया औ ताश
में घंटों रमने को जी चाहता है।
चूल्हे में सिकी मोटे बेझर रोटी का,
वो स्वाद पाने को जी चाहता है।
जीभ को प्याज नमक धनिया मिर्च का
सब स्वाद लेने का जी चाहता है।।
माँ के हाथ की रोटी का स्वाद और है,
उसे जी भर खा लेने का जी चाहता है।
हाँ, बुखार हो तो ऐसप्रो जुकाम में एनासिन,
स्वाद बदल जाए यदि मुनक्के हो नमकीन,
कोई बीमारी में दवाओं से ज्यादा असरकारी,
माँ की दुआओं में जी लेने का जी चाहता है।।
रात में जलते हुए लैम्प की नारंगी रोशनी में
भावी जीवन के लिए चलते हुए उधेड बुन में,
मुर्धवा माधव मन्दिर आँगन में बैठ कर अब,
उसकी नीरवता में खो जाने को जी चाहता है।

बुढापे में व्यक्ति संपूर्ण होता है, पर इसे क्या कहेंगे कि बुढापे में मन चंचल होकर बचपन की ओर लौटना चाहता है, कागज की किश्तियाँ तैराने और दादी की कहांनियाँ फिर सुनने को आतुर हो उठता है।

बचपन के, वे गुजरे पल

घर से चुपके से, निकाल कर बर्तन सडक पर,
लुढकाने में, नादानी का आनन्द मिलता था।
पास बाटा दूकान के डस्टबिन से छीलन को,
पत्र पेटी में डालने में, बडा मजा मिलता था।
जेठ की गर्मी में शाम को, उस गाँव किनारे,
बहती नदी के ठंडे रेत पर नंगे बदन लेटा था ।1।

याद आता है बहुत, वह म्युनिसिपल का स्कूल,
हाँफ पैंट,शर्ट में ही सदा मन रहता था मसगूल,
अब जाके देखता हूँ, वही बिल्डिंग वीरान आती है,
शासन की छोडी इमारत शमशान नजर आती है,
शिक्षक औ मित्र वहीं याद आते ही दिल रोता है
पुराने दरख्त की छाँव में, बैठने का मन होता है ।2।

बिल्डिंग के पीछे मैदान में कई गड्ढे गवाह देते,
हम सब हर खेल मस्ती में क्या-क्या मजा लेते,
अब मुट्ठी भर रेत उछालने का मन बहुत करता है,
न रहे वे अब दोस्त, उनसे लडने का मन करता है।
दीवार से लग, अहसास करता अब उन गुरूओं को,
मिलें गर सजीव तो लिपट, रोने का मन करता है ।3।

यदि हम अपने बचपन में लौटें, तो लगेगा कि जीवन कितनी आसान थी। अब बडे होकर जिंदगी के अस्तित्व की छानबीन हम करने लायक तो हो जाते हैं लेकिन बचपन सी निश्छलता और भाव-बोध कहीं गुम हो जाता है।

यादें, जो जेहन में...

बीते ख्यालों में बस मैं गया ही था,
फिर वो नजारे सब याद आने लगे।
बरखा की बूदों से सिहरता था बदन,
ये सोच फिर हौसले बुलंद होने लगे।
जो यादें जेहन में, अब तक दफन थी,
उभरकर अब वे, जख्म हरे होने लगे ॥1॥

खेले थे बचपन में, वे गलियों के सखा,
विछुड गये वे सब, मुझको रुलाने लगे।
जिनके लिए सहा, मैंने वक्त के सितम,
अब कोने में दुबके, वे मुँह छिपाने लगे।
हरे होने लगे हैं, सब जख्म अब फिर से,
सहारा दिया जिन्हें, वे ज्ञान बघारने लगे ॥2॥

आखिर, दिल ही तो है

जब सावन में, गदराये बदरा बरसे,
ऐसे में यौवन बाहर जाने को तरसे,
दामिनी की कौंध, मुखडे पर दमके,
प्रिय के बीते पत्र पढ़, भावुक होते,
ऐसे यादों के साये में ये रोता तो है,
नैना पथराये, आखिर, दिल ही तो है ।1।

फूलों की रसराई में भौंरा गुंजार करे,
रसाल की अमराई से, कोयल बेजारे,
जूही के गंध में दमके उपवन बेचारे,
भमर गीत भावों से ऊधौ बैठ विचारे,
हर वसंती साये में,पवन महका तो है,
ऐसे में मन बेकाबू हो, दिल ही तो है ।2।

कहाँ गये वे वक्त

वे,
दिन,
है कौन,
लिया छीन,
उस वक्त के।
इस वक्त ने,या
वक्त के फकत ने,
वो फक्कड बचपन की,
औ अल्हड़ लडकपन की,
उन गाँव के फैले सूनेपन में,
जाने अनजाने, अपनेपन की,
ये मान मनौव्वल होते दाई की,
हम सब पर गुस्साई माई का,
बगिया में छिपे वो भाई का,
भौजी में छिपी ललाई का,
सबमें छिना मनमौजी पन,
गुम गये इतराते जीवन,
गायब हुये वो किस्से,
चौपाल पे बनें रिश्ते,
ठहाके हुए हंसी में,
हसीं, गलफँसी में,
मस्ती के दिन,
बीत-गये,
अब-वे।

गुम गये, बुनियाद में, जो

उजाले छोड साये से जब,नाता जोड लिया तुमने,
बेदम हो अंधेरों से, तब गठजोड़ कर लिया मैने।
बेरुखी से जब,बादलों ने बरखा से रुसवाई कर ली
तब से शबनमों को पलकों पर,बसेरा दे दिया मैंने।

कोई कुछ भी सोचे मुझ पर, बोले अब यह जमाना,
नींव के बुत से मुहब्बत को, इल्म बना लिया मैने।
दिखता, वो पता नहीं क्यूँ, अब समझ में नहीं आता,
गुम गये जो बुनियाद में, उनको खोज लिया मैंने।

बुत बने लोगों को शहर में जमाने से देख रहा हूँ,
ये मुर्दे भी घाटों पे हँसने लगे, समझ लिया मैंने।
सर्द में सिकुडी बूंदे जब से बर्फबारी में तब्दील हुई,
मेघों में मोहक धनुष को, नैनों में बसा लिया मैंने।

जनम जनम का रिश्ता

जनम-जनम का रिश्ता प्यारा,
इसे किस तरह, इजहार करूँ।
दुख से भरा यह भाजन हमारा,
सुख से कैसे अब आभार करूँ।

काटों भरी, जीवन की बगिया,
इस चुभन से कैसे, आकार गढ़ूँ।
फूल चुने, जो पल पल काँटों से,
किस भाव से सब कुर्बान करूँ।

तुम बनो मेरे मन मंदिर की देवी,
ए तन अर्पण कर, मैं अनुराग बनूँ।
अक्षत, रोली, पूजा थाली में लेकर,
ऊषासंध्या भजन से आराध करूँ।

रंग, जो ऐसा चढ़ा

मतवाले हुडदंग में मस्त मतंग झूमें,
मौन मृदंग गूंज रहे,भंग के उमंग में,
वसंत के सुगंध में,तमाल के गंध में,
आम के बौर हो गए महुए के रंग में,
धरा के धूल पर भस्म का नशा चढा,
अंग हुए अनंग में, रंग, जो ऐसा चढ़ा ।1।

टेसू के फूल अब कुछ ऐसे लाल हुए,
जैसे गुलाल से, शर्मीली के गाल हुए,
कोयल के कूक से, उठी दिल में हूक,
आँसू भरी अंखियाँ कहें होकर बिद्रूप,
अर्धंगी के गंग तरंग में, यों जोश चढ़ा
भूल गये स्वयं को, रंग जो ऐसा चढ़ा ।2।

होता है: सुत भी पराया धन

तुम बिन मेरा आँगन सूना-सूना था,
अनछुआ इस घर का हर कोना था,
परिजन तब लगते थे, बिल्कुल ठूँठ,
बाग के सारी बहारें, जैसे गये हों रूँठ।
चढे मेरी जज्बातों में कब रंग नये,
जाने कब, रचना में गढे कसीदे गये,
एक कली हाल में जुडने को ही हुई,
हमारी शाखा पे, शोभित अभी ही हुई
पता ही नहीं चला, जन्म से अब तक,
बीते दिनों के हिसाब लगाते जब तक।
न जाने कब उडनें का वक्त आ गया,
मैने भी खुला आसमां, दिखा ही दिया।
तुम्हे जोश था, मैंने लक्ष्य चाँद ही बताया,
जज्बे को सलाम, तुमने वो करके दिखाया,
बस गये उस शहर अब सूना कर ये गाँव,
सूने पडे हैं खिलौने और निमिया की छाँव।
कहने को है कि तनया ही पराई होती हैं,
पिया जहाँ रहें, वह बस्ती वहीं बसाती हैं,
मुझको ये लगता, तनय भी पराये होते हैं,
इन सूखी आँखों के बूँद सभी खारे होते हैं।

संवेदना: धरा से जुडे रिश्तों का

सुविचार सुनने से, शोभा पाते हैं कान,
हाथों को मिलता यश, जब करते दान,
अपनेपन को मिलता है तभी संजीवन,
धैर्यशीलता आधारित हो मानव जीवन ।1।

परोपकार से सजती, यह नश्वर काया,
भीषण गर्मी में ज्यों राहत देती छाया,
हम अंजाने, कितने ही गुनाह करते है,
सुख दुख सब हम जीवन में सहते हैं ।2।

कठिन होता तब, सीधा सरल जीवन,
अहंकार से भर लेते जब अपना मन,
मानव में मोह, लोभ ही विकार होते हैं,
क्रोध, चिंता से सब अंग छार होते है ।3।

यदि हर्ष के ठंडे जल से तृप्ति पाना है,
तो क्षमा, शील का कुऑ खोदना होगा।
तुम्हारे नांदानियों से धरा, दुखी हुई है,
तो ईमान से करनी पे पछताना होगा ।4।

ये सौम्य नियति अति धीर क्षमाशील है,
पर हमारा धरा से रिश्ता, असंवेदनशील हैं,
पर हम स्वार्थियों को, परमक्षम्य करके,
पालती धन धान्य से,कितनी सुशील है ।5।

हम कम से कम, तो विचारशील हो लें,
अपने पश्चाताप से संवेदनशील, बन लें,
छोड दुखदायी कर्म, अब आनंदित हो लें
आपद से बचने कान पकड क्षमित हो लें ।6।

अंकुरण: नरम पत्तों में

मिट्टी में दबा रह कर भी मैं,
छुद्र सा प्राण लेकर पड़ा रहा।
सरसों कोदो से, छोटा हूँ पर,
समाया पूरे पेड़ का रूप रहा ।1।

कवच बाहर, दिखा स्पंदनहीन,
भीतर से मैं स्पंदन पूर्ण रहा।
कडे खोल में सिमटा खुद को,
नरम दिल को धडकाता रहा ।2।

मिट्टी में समाई प्राण वायु से,
हौले अपना मुख खोलता रहा।
जल के प्रेम सिंचन को पाकर,
कोमल पत्ते देके जीवित रहा ।3।

जड ने सिखाया सृजन का गुर,
पर आंधी से, दो चार होता रहा।
वक्त पर दिये रसीले फल मैंने,
बेबसों के रैन बसेरा बनता रहा ।4।

क्या जमाना आ गया

अंग में अनंग है,
बुद्धि से अपंग हैं,
बना रहे सुरंग है,
चेहरे पे उमंग है,
मति सबकी भंग है।
पर काले भुजंग है
खोज रहे कुरंग हैं।
बगीचे के क्यारी में,
कच्ची कलियों पर,
मचल रहे भृंग हैं।
जेब इनकी तंग है,
पर गिरहकटी में
लगते अकलमंद हैं।
लग रहे दबंग हैं
दंगे की आग लगा,
जला रहे पतंग हैं।
खैंच रहे चंग हैं,
चपल चलित तरंग है,
इस जीवन मौत बीच,
श्मसान भी दंग है।

आक्रोश: गुलाब के प्रति

सच में तुम हो हम सभी गुलों के आब,
शायद तभी से तेरा नाम हो गया गुलाब,
पर सुरखाब से लगते हो जनाब,
इसी बात से तो रखते ये ख्वाब,
लाट साब बनने को रहते बेताब,
वाह्‌वाही लूटकर, बनते सिरताज,
ठीक है तुममें मनमोहक आब भरी है,
पर अंदर रुआब की सडी गाद भरी है,
किस बात पर घमंड करता तू सुन बे गुलाब,
फूला अपने रंग में रंगता है रंगो किस्म आब,
खाद का खून चूस इतरा डाली के ऊपर,
कभी टूट जायेगा, पछतायेगा जमीन पर,
खुशी के सेज पर कब तक तू इठलायेगा,
टूट के डाली से इक दिन मिट्‌टी में मिल जायेगा,
जो काँटे तेरे रक्षक थे, वे सब चुभते जायेंगे,
रस लेने वाले भौंरे भी, तुझसे मुँह बिचकायेंगे।

ऐसे कुछ तो लोग कहेंगे

सूरज से रौशन होती है दुनियाँ,
जाने क्यूँ होती, चंदा संग रैना।
मेरे संग चंदा गर, मस्ती में झूमें,
और ये सारे तारे गाते सारी रैना।
धरा के गति का अर्थ बदल देंगे,
जग में ऐसे कुछ तो लोग कहेंगे ।1।

दौड भाग में, ये सब दिन गुजरे
चिंता में खोते अपनी सारी रैना,
गगन को धरा गर, दे हरियाली,
सितारें ज्योति भर दे पूरे अंगना,
सूरज से अंधेरों के भाग्य सुधरेंगे,
जग में ऐसे कुछ तो लोग कहेंगे ।2।

पलों की बातें पल में बन सकती,
अगर रजनीगंधा कह दे खुशबू से,
नीलिमा की चुनरी ओढ़कर आओ,
गुलाब के फूलों से सजे, सेज को,
हरसिंगार के गन्ध से, महका देंगे,
जग में ऐसे कुछ तो लोग कहेंगे ।3।

अगर जिंदगी को गमले के पौधे की तरह सवाँरेगे,तो थोडी सी धूप लगने पर मुरझा जाने का डर है........

इसलिए इसको जंगल के पेड की तरह सभी तरह की मौसम से सामना करने देना चाहिए जिससे हर परिस्थिति में मस्ती में झूम सके।

विश्वास है: छटेंगा तमस घनेरा

धडकती धडकनों के प्यार के उन्माद से,
साँसों में अपनत्व के ताप का आभास हो,
संवेदना से जंग विजय होने के जज्बात से,
अपनत्व में आपस के विश्वास की बात हो।
तमस घनेरा छँट जायगा चाँदनी स्वागत से,
बहती हवा में, सोंधी महक का अहसास हो ।1।

रहें हर जीवन की अधिक बचाने का प्रयास,
इस जिंदगी के सार के समझ का प्रकाश हो,
गर लौट चलें अपने बीते पल के धरातल को,
हर गोद में गर्माहट और ममता की प्यास हो,
तमस घनेरा छँट जायेगा प्यार भरे सौगात से,
मानवता के तंग जमीं पे आँगन की तलाश हो ।2।

जीवन बदला तेजी से जो, मापा इसे समय संग,
बहुतक खोया हमने, अनंत नियति से विलग हो,
विकास के मानक मिले, पर न रही वो बात अब,
खोई अखंडता पाने का, ये फिर सच्चा प्रयास हो,
तमस घनेरा छँट जायेगा, यूँ मानव के जज्बात से,
भूले अर्थ भाव में आये, फिर जीवन का स्वाद हो ।3।

विश्वास के साथ स्वीकार करने की हिम्मत और सुधार करने की नियत हो तो इंसान बहुत कुछ कर सकता है ।

माँ, एक अक्षरधाम है

माँ,
एक शब्द है,
ऐसा शब्द,
जिसके आगे,
सब शब्द, निशब्द।
माँ,
ऐसा अक्षर है,
अक्षरधाम,
जिसके आगे,
व्यर्थ सब धाम है।
माँ,
एक मर्म स्थान है,
जिसके आगे,
छोटा सारा जहान।
माँ,
एक उत्सर्ग है,
जिसके आगे,
तुच्छ होते है स्वर्ग।
माँ
होती निर्मल धारा,
ममता धीरता की,
तृप्त होता जग सारा।

अब ये क्यूँ होता है?

सूरज पहले जितनी गर्मी देता था,
वो अभी भी उतनी ही गर्मी देता है,
अब धरा, क्यूँ इतनी तपित होती है,
कभी सोचा है? अब ये क्यूँ होता है ।1।

पर्वत से नदियाँ पहले भी बहतीं थी,
अब भी वैसे ही लहरा कर बहती है,
गर्मी में सूखी, वर्षा में बाढ लाती है।
कभी सोचा है? अब ये क्यूँ होता है ।2।

पहले खेत में कम पैदावार होता था,
तब तनमन से स्वस्थ रहा करता था,
अब सुपोषित हो रुग्ण रहा करता है,
कभी सोचा है? अब ये क्यूँ होता है ।3।

सोचो! दिल दिमाग लगा कर सोचो,
बिमार सोच से उबरने की कुछ सोचो,
लालच से, तो कहीँ वर्जनायें टूट रहीं,
विकार, मन मस्तिष्क दूषित कर रहीं ।4।

खुदगर्जी में पैरों में कुल्हाडी मारा है,
कुविचारों से भरा, ये समाज सारा है,
नियति चल कर, चुपचाप कह देती है,
न बदले तो खतरा है, ये संकेत देती है ।5।

बस, सब्र कर

हमें होठों से लगाने का, न था सऊर,
जमाने ने सिखाया, यह कम नहीं था।
आने दो वक्त, फिर छायेगा वो सुरूर,
रुख ने कहा गम कर, ये कम नही था।
खुशबू की गमक, अभी रुकी है जरूर,
जरा सब्र कर, ढुरकेगी, ये कम नहीं था ।1।

साँझ मुस्कुरा कर बोला, रात गहराने दे,
तप रहा है सूरज, अब ढ़ल जाने तो दे।
पता नहीं ऊँट किस बगल बैठे बक्त का,
रात के दीवार पर, चाँद दीदार होने तो दे।
लू के थपेडों से सारा शहर परेशान तो है,
सब्र कर, शबनम से हवा नम होने तो दे ।2।

भय गहराते, बेगानेपन में

दावानल क्यों? हिमगिरि के नीरव वन में,
कोलाहल अब है, श्वेत कपोत के आँगन में,
मसि में डूबी लेखनी ह्रुई क्यों? विचलन में,
हलाहल घुला क्यों? अब इस नंदन वन में,
अब अंतर्मन के हलचल हो रहे, चिंतन में,
ज्ञान की धार हो गई, म्यान के कुंठन में ।1।

मुक्ताहल निकली सीप से ज्यों अनमन में,
पडी काली जाने कब? इस पावन आँगन में,
अब मुँह औ मन की साँस है दोगलेपन में,
धरा की चीर अधीर ह्रुई, इसी बेगानेपन में,
नद के तर्जन से भय गहराते, एकाकीपन में,
बस जाओ श्याम! सुरम्य शाम के आँगन में ।2।

अहसास: पिता के वजूद का

हम चाँद सितारे हैं, उस परिवार के,
जिनका पिता एक आकाश होता है।
जिसके रोशनी से दमकता पूरा घर,
वह तो, पिता का ही प्रकाश होता है ।1।
आसमाँ से ऊँची, गर है जगह कहीं,
तो वह, पिता का ही स्थान होता है।
कंधे पे बैठा लेते, तब लगता मुझको,
इस सारे जग का अभिमान छोटा है ।2।
हमारे दुलार पे कुछ भी कहते नहीं वे,
पर चुप्पी में छुपा यार नजर आता है।
हमारी खुशी में लाखों गम भूल जाते,
तोतली पे दिल बाग-2 नजर आता है ।3।
जोश आता कुछ कर गुजरने का जब,
मेरी अगुँली पापा का हाथ में आता है।
सारे परिवारों के आदर्श बन जाते तुम,
गर, उन्नति में चार चाँद लग जाता है ।4।
तुम नहीं, तो लगता घर की छ्त नहीं,
तनिक बयार में, तूफाँ नजर आता है।
आग के शोले से लगते है, सभी संबंधी.
शीशे से देखो, सब वीरां नजर आता है ।5।

तमन्ना रगों में तो है

सुना है, स्वजन जब धरा पर नहीं होते,
वे सभी आसमान में तारे होकर चमकते
हमारी यश से खुश हो मिल के दुआ देते,
मुसीबत आने पर, वे आगे आकर टालते,
वे पूर्वज ही हैं, जो हमें घेरकर रक्षा करते
हम सदा सुखी रहें, इसकी मिन्नतें करते ।1।

देखो तो वो तारा, जो अभी बहुत चमका है,
वो कोई और नहीं, हमारे सभी पूर्वजों का है,
आज इन्हें पाने की ललक से उठ चली हूँ,
धरा से ऊपर उठ, अब वो ताकत ला चुकी हूँ,
साधन न भी सही, ताकत कदमों में तो है,
अम्बर तक जाने की तमन्ना रगों में तो है ।2।

नमन, उस शिल्पी को

जाने क्यूँ मै चूमना चाहता हूँ वो बुनियाद,
जहाँ से उठती हैं दीवारें, बन जाते प्रासाद,
याद आता है अब उन बीते दिनों की बात,
विस्मृत रही बर्षों से, अब लगे पल की बात,
धँसा कंकर बनके, कहाँ था इसका आभास,
जर्रे में समाया, सह रहा था वो सारे परिहास ।1।

सहमा था मन में, पता नहीं कौन करे आघात,
किसी ने बल को तौला, कुदाल से कर प्रतिघात,
नमन है उन लोगों को जो रखते थे ये जज्बात,
स्वीकार किया सीढी बनना, खुद हो गये निष्प्राण,
कंकर में देखा रौद्र रूप उसे, और रज-2 में ज्वाला,
धरा पर बुलंदी को पहचाना था, वह शिल्पी वाला ।2।

कहीं दूर न जाना

उस गांव की मिट्‌टी ने तुमसे प्यार किया है,
अब कहला भेजा है वह बात, क्या याद है,
तुम्हीं ने कहा था मुझमें सोंधी खुशबू बसी है,
दिल, दिमाग क्या, उसमें वह आत्मा रची है,
इसे छोड कहीं तुम, इतने दूर न चले जाना,
रिश्ते की डोरी टूट जाये फिर पडे पछताना ।1।

बैट से उछाली गेंद, गिरी थी किसी छत पर,
उसने संदेश भेजा है, बात क्या याद है अब,
नहीं मिलती तो खोजते थे नाली में घुसकर,
सैर पे जाते जब, तो कहे दप्पू की रेल तुमसे,
इसे छोड कहीं तुम, इतने दूर न चले जाना,
रिश्ते की डोरी टूट जाये फिर पडे पछताना ।2।

नाम - ओमप्रकाश गुप्ता (अवकाश प्राप्त प्रवक्ता, गणित)

जन्मतिथि - पन्द्रह जनवरी सन उन्नीस सौ पचपन

शिक्षा - एम.एस.सी.(गणित), एम.ए. (अर्थ., समाजशास्त्र), बी.एड.

पता - डी.एस./II/596, बारसा कालोनी (मिलेनियम पार्क बैक गेट के पास), किरंदुल-दन्तेवाड़ा, छत्तीसगढ़ (पिनः494556)

मोबाइल - **9424278427**

ईमेल - **opgupta.kdl@gmail.com**

प्रकाशन - जी.बी.पन्त यूनिवर्सिटी, उत्तराखंड (२००७) मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल (२००८) दिल्ली विश्वविद्यालय, साउथ कैंपस (२०१०) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, (२०१२) में गणित के विभिन्न प्रमेयों, संकल्पनाओं पर शोधपत्रों का प्रस्तुतिकरण और प्रकाशन। एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली के त्रैमासिक पत्रिका (स्कूल सांइस, मार्च २००३) में 'औरिगैमी से गणित शिक्षण' लेख का प्रकाशन, आकाशवाणी जगदलपुर के विभिन्न आयोजनों में कवि गोष्ठी, कविता पाठ, छात्रीय कार्यक्रम (विज्ञान,गणित), परियोजना के राजभाषा पत्रिकाओं में विभिन्न लेखों और कविताओं का प्रकाशन इत्यादि।

सम्मान - परियोजना के अनु.जाति, जन जाति एसोसिएशन द्वारा २०११ में अंबेदकर जयंती पर 'शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान' पर शील्ड और सम्मान पट्टिका प्रदत्त ।

१. अन्तरा शब्दशक्ति संस्था द्वारा ''लोकप्रिय रचनाकार'' सम्मान, (यू ट्यूब चैनल में प्रस्तुति पर), २. व्यूवर्स संख्या २११२: दिनांक २५/०७/२०२१ तक, ३. कृति ''मेरी जीवन यात्रा" पुस्तक प्रकाशन पर ''साहित्य साधक सम्मान" २०२० प्रदत्त।, ४. साहित्य संगम संस्थान, उत्तर प्रदेश इकाई द्वारा उ.प्र. ''शब्द शिल्पी'' सम्मान प्रदत्त।५. साहित्य मित्र मंडल, जबलपुर,म.प्र. द्वारा ''उत्तम सृजन'' सम्मान प्रदत्त।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9424765259, ईमेल - antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-90995-38-7

मुल्य - 200/-